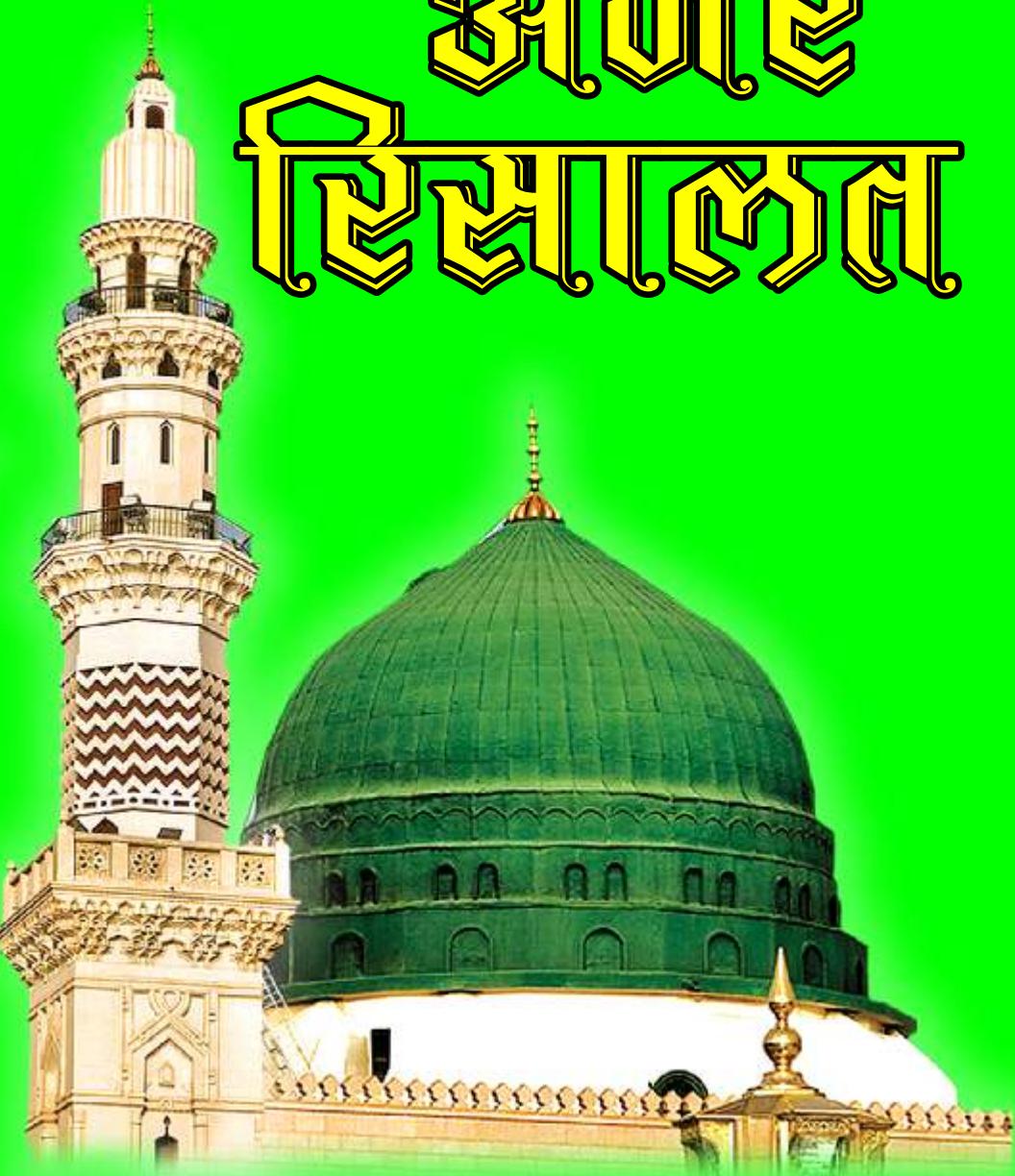


ଆଜାଦ ଇସ୍ଲାମ



આજાએ બેદાનાંદુણ

મિનજાનિબ
ગુલામાને બારગાહે સરકાર
આલમપનાહ હુજૂર વારિસ-એ-પાક
(આજમ-અલ્લાહો-જિક્રહુ)

મુઅલ્લફ
યકે અજુ ગુલામાને બારગાહે
સરકાર આલમપનાહ સૈરયદના હુજૂર વારિસ-એ-પાક
'ઇન્જીનિયર જાબિર ખાન વારસી'
(લખાનતુ)

لَمْ يَأْتِ الْحِكْمَةُ إِلَّا لِنَفْعٍ

قُلْ لَا إِسْنَلْ كُمْ عَلَيْهِ أَجْرٌ إِلَّا مَوْدَةٌ فِي الْقُرْبَىٰ^①

(“ऐ महबूब ! आप फरमा दीजिए, कि मैं अपने इस कारे रिसालत पर तुम से कोई ‘उज़रत’ नहीं माँगता मगर मेरी क़राबत (एहलेबैत) की मवद्दत (मुहब्बत)”)

(सूरह : अश-शूरा, आयत नं.-23)

इस आयते करीमा से यह पता चला के अल्लाह ने कुरआन शरीफ में यह आयत नाज़िल फरमा कर उम्मते मोहम्मदिया पर एहलेबैत की मवद्दत व मुहब्बत को हर हाल में लाज़िम क़रार दिया है। और मवद्दते (मुहब्बत) एहलेबैत को अजरे रिसालत ठहराया है।

इसलिए इस किताब मुख्तसर रिसाले का नाम मैंने “अजरे रिसालत” रखा है, इस मुख्तसर किताबचे में एहलेबैत-ए-अतहर (अ.स.) के फज़ाइल-ओ-मनाकिब का ज़िक्र करने की हमने कोशिश की है। जो कि कुरआन-ओ-अहादीस-ए-पाक और बुजुर्गनेदीन के अक़वाल की रोशनी में हैं।

इस पुर फितन दौर में जहाँ हर तरफ फितने सर उठा रहे हैं, वहाँ एक यह भी फितना ही है कि, सुनिय्यत में ख़ारजिय्यत शामिल हो रही है, और एहलेबैत की मुहब्बत को जो कि दीन का अस्ल है, किसी एक फिरका-ए-मख्सूस से जोड़ा जा रहा है, जबकि एहलेबैत की मुहब्बत तो कुरआन की रु से हम पर फर्ज़ है।

अल्लाह का यह फ़ज़्ल हुआ-मुझपे कि स्वाल आया क्यों न एहलेबैत-ए-अतहर (अ.स.) की फज़ीलत में एक किताब लिखूँ जिस किताब के जरिए से अल्लाह हमें अस्ल मज़हबे हक़ एहलेसुन्नत-वल-जमाअत के नज़रिये व अक़ाइद जो एहलेबैत-ए-पाक से मनसूब है, उन पर ईमान रखने और अमल करने की तौफीक अता करे और अवामुन्नास को सही इस्तेफादा करने का ज़रिया फराहम हो।

और अल्लाह तआला हमारे दिलों में ज्यादा-से-ज्यादा मुहब्बत-ए-एहलेबैत का जज्बा अता कर दे ताकि हम दुनिया व आखिरत में सुखुरु हो सकें।

इस मुख्तसर ज़िक्रे एहलेबैत ‘अजरे रिसालत’ का मक्सद सिर्फ उम्मत में फैली ख़ारजियत पर बन्द लगाना और अस्ल मज़्हबे हक़का को लोगों तक पहुँचाना है, अल्लाह व रसूल कुबूल फरमाएँ ! आमीन।

इस किताब ‘अजरे रिसालत’ में जितने भी हवाले पेश किये गये हैं, वह सब कुरआन-ओ-हदीस-ए-पाक और बुजुर्ग उल्मा-ए-एहलेसुन्नत की कुतुब से लिए गए हैं।

आज वह पुरफितन दौर आ गया के अगर किसी ने हज़रत मौला अली (क.व.क.) को मौला अली कहा, या पंजतन पाक का लफ़्ज़ कहा तो उसको लोग शिया और न जाने क्या-क्या कहने लगते हैं, इसलिए इस किताब में हमने यह बयान करने की कोशिश की है, कि बुजुर्गानेदीन जिनके दर से एक आलम फैज़याब होता है, उन सारे बुजुर्गों के सिलसिले - हज़रत मौला अली शेरे खुदा (क.व.क.) से जाकर मिलते हैं, यह ज़िक्रे शाने एहलेबैत किसी फिरके की जागीर नहीं है, यह तो हमारे बुजुर्गानेदीन ने हमको अता किया है।

अल्लाह ने तो हम पर मुहब्बते एहलेबैत इस तरह फर्ज़ कर दी कि उनसे मुहब्बत रखना हर हाल में लाज़िम है, और यहाँ तक कि उनका ज़िक्र-ए-पाक नमाज़ जैसी अफ़ज़ल तरीन इबादत का एक एहम हिस्सा बना दिया जिसको दुरुद शरीफ कहते हैं, जब तक नमाज़ में मोहम्मद-व-आले मोहम्मद (सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम) पर दुरुद शरीफ न पढ़ा जाए, तब तक नमाज़ भी मुकम्मल नहीं होती।

और हुजूर-ए-पाक सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम ने अपने सहाबा (र.ज.) को जितने भी दुरुद शरीफ सिखाए उसमें अपनी पाक आल को भी शामिल किया। एक रिवायत में आता है कि - हुजूर सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम ने इरशाद फरमाया - कि तुम मुझ पर दुम कटा (न मुकम्मल) दुरुद न पढ़ो ! सहाबा-ए-किराम (र.ज.) ने अर्ज़ किया -

“या रसूल-अल्लाह (सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम) ! यह दुम कटा दुरुद क्या है ? तो हुजूर (अ.स.) ने फरमाया : “तुम कहते हो ‘अल्लाहुम्मा सल्ले अला मोहम्मद’ और रुक जाते हो, बल्कि यूँ कहा करो “अल्लाहुम्मा सल्ले अला मोहम्मद-वा -अला-आले मोहम्मद”

(सवाइक-अल-मुहर्रिका-सफा-430)

तो आले मोहम्मद (स.अ.वा.व.) दुरुद से जुदा नहीं और दुरुद नमाज़ से जुदा नहीं, यानि मोहम्मद-ओ-आले मोहम्मद (स.अ.वा.व.) के वसीले से ही हमारी इबादतें मक्खूल होती हैं, इसलिए नमाज़ के आधिकार में मोहम्मद-ओ-आले मोहम्मद (स.अ.वा.व.) पर दुरुद शरीफ पढ़ा जाता है कि वह अल्लाह की बारगाह में कुबूल हो जाए ।

और इस किताब का भी यही मक्सद है कि हमारी इबादतें, हमारी रियाज़तें मोहम्मद-ओ-आले मोहम्मद (स.अ.वा.व.) के वसीले से बारगाहे खुदा में कुबूल हो, और इस किताब की तकमील के लिए मैं सरकार आलमपनाह हुजूर वारिस-ए-पाक के फैज़ान-ए-करम का ममनून व मशकूर रहूँगा कि जिन्होंने मेरी रहनुमाई के लिए औलादे हुजूर गौस-ए-आज़म ख़तीबे एहलेबैत हज़रत अल्लामा मौलाना सैयद फराज़ हसनी वारसी (म.ज.अ.) को इस कारे ख़ैर में मेरा निगराँ बनाया और आपकी रहबरी में मैं यह किताब मुकम्मल कर पाया ।

इस किताब के ज़रिये अल्लाह लोगों के दिलों में मुहब्बते एहलेबैत नक्श कर दे (आमीन) ।

“किबला-ए-ईमान-ओ-दीं नवशे कूदूमे एहलेबैत
काबा-ए-मक़्सूद ‘बेदम’ आस्ताने पजतन” । ।

(हुजूर फकीर बेदम शाह वारसी (र.ह.))

फेण्टरिस्ट

1.	बाब	- एहलेबैत के जामेअ मनाकिब का बयान -	05
2.	बाब	- हज़रत मौला अली शोरे खुदा(क.व.क.) के मुख्तसर फज़ाईल-ओ-मनाकिब का बयान -	12
3.	बाब	- इल्मे हज़रत मौला अली(क.व.क.)-	19
4.	बाब	- फज़ाईल-ओ-मनाकिब हज़रत ख़ातून-ए-जन्नत सव्यदा फ़ातिमा ज़हरा(स.अ.)का बयान -	20
5.	बाब	- हज़राते हसनैन करीमैन(अ.स.)के जामेअ मनाकिब का बयान -	24
6.	बाब	- सबसे एहम सुन्नते रसूल(स.अ.वा.व.)-	28
7.	बाब	- मुहब्बते-एहलेबैत-ए-अतहर(अ.स.)-	29
8.	बाब	- एहलेबैत मिस्ले कश्ति एहज़रत नूह(अ.स.)-	32
9.	बाब	- कुरआन और एहलेबैत -	33
10.	बाब	- मोमिन और मुनाफ़िक की पहचान -	34
11.	बाब	- सहाबा-ए-किराम(र.ज.)का अदब व ताजीम-ए-एहलेबैत	35
12.	बाब	- आले रसूल(सव्यद-ज़ादों)की ताजीम -	40
13.	बाब	- अइम्माए-एहलेबैत-ए-अतहार(अ.स.)के नाम-ए-मुबारक में शिफा -	42
14.	बाब	- एहलेबैत की मुहब्बत में मरना शहादत है -	44
15.	बाब	- 'निजात-ए-मुहिब्बाने एहलेबैत -	45
16.	बाब	- फुक्हा-ए-इज़ाम व बुजुर्गान-ए-दीन, औलिया-अल्लाह के अक़वाल एहलेबैत-ए-अतहर की शान में -	46

एहलेबैत के जामेअ मनाकिब का व्यापार

1. आयते मवद्दत व अजरे रिसालत -

“ऐ महबूब ! आप फरमा ढीजिए, कि मैं अपने इस कारे रिसालत पर तुम से कोई ‘उजरत’ नहीं माँगता मगर मेरी क़राबत (एहलेबैत) की मवद्दत (मुहब्बत)”

(सूरह : अश-शूरा, आयत नं.-23)

- हज़रत इब्ने अब्बास (र.ज.) फरमाते हैं, कि जब नबी करीम ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ पर यह आयते करीमा नाज़िल हुईं, तो मैंने नबी करीम ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ से पूछा के यह क़राबत वाले (एहलेबैत) कौन हैं, जिन की मवद्दत के लिए अल्लाह ने इस आयत में हुक्म फरमाया है, तो नबी करीम ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ ने इरशाद फरमाया “यह क़राबत (एहलेबैत) वाले लोग - हज़रत अली (क.व.क.), हज़रत ख़ातूने जन्नत फातिमा ज़हरा (स.अ.), और मेरे दोनों बेटे ‘हज़रत इमाम हसन (अ.स.), हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.) हैं” (मजमउल कबीर, जिल्द-3, सफा-39, हदीस-2641)

नोट - अल्लाह तआला ने एहलेबैत की मवद्दत व मुहब्बत हम पर इस आयते कुरआनी से फर्ज की है, और फर्ज ही नहीं की बल्कि उनकी मुहब्बत को ‘अजरे रिसालत’ करार दिया, क्योंकि हुजूर (अ.स.) ने इरशाद फरमाया है, ‘कि मैं अपने इस कारे रिसालत पर तुम से कोई ‘उजरत’ नहीं माँगता मगर मेरी क़राबत (यानी एहलेबैत) से मवद्दत (मुहब्बत) रखो’, तो हुजूर (अ.स.) ने अपनी उम्मत से अपनी रिसालत-ओ-तबलीग-ए-दावते हक पर कोई उजरत नहीं मांगी मगर अपनी उम्मत से उसके बदले में अपनी एहलेबैत से मवद्दत रखने को फरमाया, तो एहलेबैत-ए-अतहर (अ.स.) की मुहब्बत

(मवद्दत) अजरे रिसालत करार पाई। यह अजरे रिसालत पूरी उम्मत के लिए है न कि किसी एक (फिरका मख्सूस) के लिए।

और यहाँ इस आयत में मुहब्बत की जगह मवद्दत आया है, तो किताबचे का ख्याल करते हुए के तवील न हो और दूसरे मनाकिब ज़्यादा से ज़्यादा आ सकें बहुत ही मुख्तसर में बयान है कि -

“मवद्दत उसे कहते हैं जहाँ मुहब्बत हर हाल में रखना वाजिब हो”।

2. आयते ततहीर –

“अल्लाह पाक का इरादाह यही है कि, ऐ एहलेबैत (नबी के घर वालों)
तुम्हें हर नापाकी से दूर रखो, और पूरी तरीके से तुम्हें ख़ूब
पाक व सुथरा कर दे ।”

(सूरह : अल-अहज़ाब, आयत नं.-33)

- हज़रत अबु सईद खुदरी (र.ज.) फरमाते हैं, कि एहलेबैत से मुराद यहाँ इस आयत में - “हज़रत मौला अली शेरे खुदा (क.व.क.), हज़रत ख़ातूने जन्नत फातिमा ज़हरा (स.अ.), हज़रत इमाम हसन (अ.स.) व हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.) हैं”

‘रिवायत है कि एक रोज़ हज़रत फातिमा ज़हरा (स.अ.) गोशत के समोसे बना कर हुज़ूर (अ.स.) की खिदमत में लाई, तो हुज़ूर सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम ने फरमाया कि ऐ जाने पिंदर ‘अली, हसन व हुसैन’ (अ.मु.स.) को बुलाओ ताकि हम सब मिल कर खाएँ, जब सब आ गये और खाना खा लिया तो हुज़ूर (अ.स.) ने उन चारों और खुद को अपनी कमली में दाखिल करके फरमाया, “ऐ अल्लाह ! यह मेरी एहलेबैत है इन से रिज्स (नापाकी) को दूर फरमा और इनको पाकीज़ा रख” उसी वक्त यह आयते ततहीर नाज़िल हुई (सुब्हान-अल्लाह)। बाज़ तपसीरों में लिखा है कि जब हुज़ूर (अ.स.) नमाज़ के वक्त दरे फातिमा ज़हरा (र.ज.अ.) पर गुज़र फरमाते तो फरमाते -

**السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا أَهْلَ الْبَيْتِ الصَّلوةُ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيَدْهِبَ
عَنْكُمُ الرِّحْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ**

(तपसीरे हुसैनी, जिल्द-2, सफा-600)

नोट - (अल्लाह ने इस आयत में एहलेबैत-ए-पाक की पाकीज़गी व उनकी तहारत का जिक्र किया है। और हुजूर 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' ने जब अपनी कमली (मुबारक चादर) में चारों नूफूसे नूरानी को दाखिल किया तो उस मुबारक कमली में पाँच नूफूसे नूरानी जलवा अफरोज थे, (i) हुजूर (स.अ.वा.व.), (ii) हज़रत अली (र.ज.), (iii) हज़रत फातिमा ज़हरा (स.अ.), (iv) हज़रत इमाम हसन (अ.स.), (v) हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.) थे, तो इसलिए कमली में तन थे पाँच और नाज़िल हुई आयत उनकी शान में उनकी पाकी व तहारत के चरचे के लिए, इसलिए एहले-इश्क़ ने कुरआन-ओ-हदीस के मुताबिक उनको 'पंजतन पाक' कहा।

इसलिए इन पाँच मुबारक हस्तियों को एक-साथ पंजतन पाक भी कहते हैं। क्योंकि अल्लाह ने इनको पाक रखा है और उनकी पाकी का ऐलान फरमाया है। इसका यह भी मतलब नहीं के सहाबा-ए-कराम (र.ज.अ.) की कोई शान नहीं है। वह भी अपने-अपने दर्जे पर फ़ायज़ हैं, और उनको हुजूर (अ.स.) ने अपने करम से नवाज़ा है, लेकिन 'पंजतन पाक' वह हैं जिनको खुद अल्लाह ने अज़्ज़ल से पाक किया है और उनकी पाकी का ऐलान खुद फरमाया है, इसलिए 'पंजतन पाक' से किसी का मुकाबला नहीं हो सकता। अल्लाह ने पंजतन पाक को इस तरह पाक किया है कि उनको पाकी का दरिया बना दिया है। अल्लाह ने खुद इरादा किया है, और अल्लाह का इरादा तब से है, जब से अल्लाह है।)

3. आयते मुबाहिला –

“तो फिर ऐ महबूब ! जो तुमसे ईसा (अ.स.) के बारे में हुज्जत करे बाद
 इसके कि तुम्हें इल्म आ चुका तो उनसे फरमा दो ‘आओ हम
 बुलाएँ अपने बेटे और तुम्हारे बेटे और अपनी औरतें और तुम्हारी
 औरतें, अपनी जानें और तुम्हारी जानें (नफ़स) फिर मुबाहिला करें
 तो झूटों पर अल्लाह की लानत डालें”

(सूरह : आले-इमरान, आयत नं.-61)

- (i) हज़रत सअद इब्ने अबि वक़्कास (रजि.) से मरवी है कि जब आयते मुबाहिला नाज़िल हुई तो नबी-ए-करीम 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' ने जनाबे

अमीर मौला अली (अ.स.), हज़रत सय्यदा ज़हरा (अ.स.), हज़राते हसनैन करीमैन (अ.मु.स.) को बुलाकर कहा - ऐ अल्लाह ! यह मेरे एकलेबैत है।

(सहीह मुस्लिम शरीफ, जामेअ तिरमिजी व दीगर कुतुबे हदीस)

- (ii) हज़रत जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह (र.ज.) से मरवी है, इस आयत में 'अनफुसाना' (यानी जब यह फरमाया के तुम लाओ अपनी जानें और हम अपनी जानें) तो 'أَنْفُسَكُمْ' से मुराद 'हज़रत मौला अली (अ.स.)' हैं, और जब यह फरमाया ('हम बुलाएँ अपने बेटे और तुम्हारे बेटे) यानि 'أَبْنَائِنَا' से मुराद (हज़रत इमाम हसन (अ.स.), हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.) हैं, और जब यह फरमाया (हम लाएँ अपनी औरतें और तुम तुम्हारी औरतें) तो 'أَنْسَاتُنَا' से मुराद हज़रत ख़ातूने जन्नत फातिमा ज़हरा (स.अ.) है,

(एहसनुल इन्तिखाब-फी-मईशते-अबू-तुराब, सफा-125)

- (iii) तपसीर अबु हातिम में हज़रत इब्ने अब्बास (र.ज.) से मरवी है कि नजरान के कुछ ईसाई हुजूर (अ.स.) की बारगाह में आकर कहने लगे आप हमारे 'ईसा मसीह' के बारे में क्या कहते हैं, तो हुजूर (अ.स.) ने फरमाया के वह ईसा अल्लाह के बन्दे व रसूल हैं, तो ईसाई हुजूर (अ.स.) से कहने लगे कि आप अगर सादिक हैं, तो हमें कोई खुदा का बन्दा ऐसा दिखाये जो बिना बाप के पैदा हुआ हो, और जो मुरदा जिन्दा करता हो, कोटियों को शिफा देता हो और मिट्टी से जानवर बनाए और फिर उसमें रुह फूँके के वह उड़ जाए (यह सारे मोअज्जेज़ात जनाबे ईसा (अ.स.) के हैं) तो हुजूर 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' यह सुनकर के वही-ए-इलाही का इन्तेज़ार करने लगे, तब यह 'आयते मुबाहिला' नाज़िल हुई, फिर हुजूर (अ.स.) ने उन नसारा-ए-नजरान से फरमाया अगर तुम इस्लाम नहीं लाते तो अल्लाह ने मुझे तुमसे 'मुबाहिला' करने का हुक्म दिया है, आओ मुबाहिला करो। (आपस में एक दूसरे पर अल्लाह की लानत (बद-दुआ) करने को मुबाहिला कहते हैं) तो उन लोगों ने दूसरे रोज़ का वाअदा किया जब सुबह हुई तो हुजूर (अ.स.) के साथ हज़रत अली (क.व.क.), हज़रत फातिमा ज़हरा (स.अ.) व हज़राते हसनैन करीमैन तशरीफ लाएँ (मुबाहिला के लिए)। तो नसारा नजरान के पेश्वा ने

जब 'पंजतन पाक' को देखा तो वापस गया और अपने गिरोह से कहा - "कि मैं ऐसे चेहरे देखता हूँ के अगर यह खुदा से दुआ माँगे के पहाड़ अपनी जगह से हट जाए, तो अल्लाह पहाड़ को अपनी जगह से हटा देगा, तुम उनसे मुबाहिला मत करो वरना ज़मीन पर कोई ईसाई बाकी न रहेगा, तो फिर उन्होंने हुजूर (अ.स.) से मुबाहिला नहीं किया ।

(एहसनुल इन्तेखाब-फी-मईशते-अबु-तुराब, सफा-126)

(नोट - इस आयते मुबाहिला में अल्लाह ने 'पंजतन पाक' की शान-ओ-अज़मत बयान की है, इसमें एहलेबैत यानी पंजतन पाक आए हैं, मुबाहिला करने (मुबाहिला - जो हक पे होता है, वह झूठों पर लानत करता है) नसारा नजरान से, तो जब अल्लाह ने यह फरमाया के तुम लाओ अपने बेटे और हम अपने तो हुजूर (अ.स.) सिर्फ जनाबे हसन व जनाबे इमाम हुसैन को साथ लाए तो इस आयत से हुजूर (अ.स.) के बेटों से मुराद हुज़राते हसनैन करीमैन (अ.मु.स.) हैं। इन दोनों को अल्लाह ने रसूल के बेटे बना दिया है, इसलिए क़्यामत तक इन्हीं के नस्ले पाक ही आले रसूल व सय्यद ज़ादा हैं। आले रसूल में भी दो अक्साम हैं, जो आल हज़रते इमाम हसन (अ.स.) की नस्ले पाक से हैं वह 'हसनी' सय्यद हैं, और जो आले पाक हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.) की नस्ले पाक से हैं, वह 'हुसैनी' सय्यद हैं।)

4. आयते मुहब्बत -

“**‘और खाना खिलाते हैं, अल्लाह की मुहब्बत में ‘मिसकीन’, ‘यतीम’
और ‘असीर’ को उनसे कहते हैं, कि हम तुम्हें ख़ास अल्लाह के
लिए खाना अता करते हैं ! तुमसे कोई बदला या
शुक्र गुज़ारी नहीं माँगते’**

(सूरह : अद-दहर, आयत नं.-8-9)

- इस आयत की तफसीर में यह है कि - हज़रत हसन व हज़रत हुसैन (अ.मु.स.) बचपन में एक बार बीमार हो गये तो तो हज़रत मौला अली (र.ज.), हज़रत ख़ातूने जन्नत सैय्यदा फातिमा ज़हरा (स.अ.) और उनकी कनीज़ हज़रते फिज़ा (र.ज.) ने उन दोनों शहज़ादों की सेहत के लिए 3 रोज़ों की मन्नत मानी, अल्लाह ने उन

दोनों अजीम शहज़ादों को शिफा दी, जब नज़्र के रोज़ों को अदा करने का वक्त आया तो सबने रोज़ों की नीयत कर ली, एक यहूदी के पास हज़रत मौला अली (र.ज.) ने मज़दूरी करके 3 'साअ़' जौ लाए, एक-एक साअ़ तीनों दिन पकाया लेकिन जब अफ्तार का वक्त आया और तीन रोज़दार (हज़रत अली, हज़रत सच्चदा फातिमा ज़हरा, हज़रत फिज़्ज़ा (कनीज़े ख़ातूने जन्नत) (र.ज.) के सामने रोटियाँ रखी गयीं। तो एक दिन 'मिसकीन', एक दिन 'यतीम', एक दिन 'असीर' (कैदी) दरवाज़े पर आ गये और रोटियों का सवाल किया (खाना मांगा) तो तीनों दिन सब रोटियाँ साईल (माँगने वाले) को दे दी गई, और सिर्फ पानी से अफ्तार करके अगला रोज़ा रख लिया गया (ऐसा ही तीनों दिन रहा) हज़रत फिज़्ज़ा (र.ज.), हज़रत ख़ातूने जन्नत सच्चदा फातिमा ज़हरा (स.अ.) की ख़ादिमा (कनीज़े) थीं। तब अल्लाह ने आयत एहलेबैत की शान में नाज़िल फरमाइ -

(तप्सीर खज़ाएनुल-इरफ़ान, सफा-1043, पारा नं.-29)

नोट - इस मुबारक वाक्य से एहलेबैत-ए-अतहर (अ.मु.स.) की सख्तावत का अजीब व ग़रीब और अदीम-उल-मिसाल हाल मालूम होता है, मुसलसल तीन रोज़े और सेहरी व अफ्तार में सिर्फ पानी पी कर रोज़े रखना और खुद भूके रह कर रोटियाँ साईलों (माँगने वालों) को दे देना यह मामूली बात नहीं है, यह वही कर सकते हैं जिनके ऊपर अल्लाह अपना फज़्ल-ए-ख़ास अता करे, यानी जो सरापा रहमत व करम हों, मक्सूदे कायनात हो। इसी बात को एक ख़ूबसूरत अंदाज़ में हुज़ूर लिसाने तरीकत सिराजु-श-शोअरा हज़रत फ़कीर सच्चद बेदम शाह वारसी (र.ह.) ने फरमाया -

“बेदम यही तो पाँच हैं मक्सूदे कायनात,
ख़ैखनिनसा, हुसैन-ओ-हसन, मुस्तफा व अली”

उम्मत के लिए हिदायत -

'अब यहाँ से एहलेबैत की शाने सख्तावत और लिल्लाहियत दोनों का पता चलता है, क्या सख्तावत है कि खुद परवरदिगारे आलम उनकी तारीफ में क्रुरआन की आयतें नाज़िल फरमा रहा है (सुल्हान-अल्लाह) तो हम उनके मानने वाले हैं, हमें भी भूकों को खाना खिलाना चाहिए, अल्लाह व रसूल-ओ-आले रसूल की मुहब्बत

में, यह सुन्नते एहलेबैत है।

ऐसा ज़माने में कोई घराना नहीं सिवाए नबी के घराने (एहलेबैत) के, कि जो खुद भूके रहते हैं, पर दूसरों को खाना खिलाते हैं, अल्लाह की मुहब्बत में।

5. आयते मनजिलत-

“चलाएँ दो दरिया मिलते हुए और उन दोनों से मोती और मूँगे निकाले”

(सूरह : अर-रहमान, आयत नं.-19, 21)

- इस आयत की तप्सीर में मुफस्सीरीन ने बयान किया है कि -

‘हज़रत अनस बिन मालिक (र.ज.) (खादिमे खास हुज़र (अ.स.)) से रिवायत है कि **لَيْلٌ** (दो दरिया) से मुराद जनाब अमीर मौला अली शेरे खुदा (क.व.क.) और हज़रत खातूने जन्नत बीबी पाक सथ्यदा फातिमा ज़हरा (र.ज.) हैं, और **الْمُؤْلُوُدُوُالْمُرْجَانُ** (मोती और मूँगा) से हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन (अ.मु.स.) मुराद हैं।

(एहसनुल इन्तेखाब-फी-मईशते-अबु-तुराब, सफा-132)

नोट - इस आयत में दरिया-ए-विलायत हज़रत अली (र.ज.) और दरिया-ए-तहारत हज़रत सथ्यदा फातिमा ज़हरा (र.ज.अ.) को फरमाया गया है, तो यह दोनों दरियाएँ फैजे विलायत व तहारत हैं, अल्लाह ने इनको मिलाया और मोती और मूँगे बनायें (यानी जब यह दरिया मिले तो हज़राते हसनैन करीमैन का ज़ुहूर-ए-पुर नूर हुआ) और यह दोनों दरिया का फैजे विलायत व तहारत उनमें आया और उनसे ही फिर विलायत का फैज़ सबको मिला, कोई हो, गौस हो, कुतुब हो, अबदाल हो, वली हो, वह इसी दरिया के फैजे विलायत व तहारत से लबरेज़ है, जो आज भी बुजुर्गनेदीन के सलासिले तरीकत की शक़ल में जारी व सारी है।

(सुब्हान-अल्लाह)

हज़रत अमीर-उल-मोमिनीन मौला अली शेरे खुदा (क.व.क.) के मुख्यसर फज़ाईल-ओ-मनाकिब का बयान

1. “आज हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया”

(सूरह : अल-मायदह, आयत नं.-3)

- इस आयत-ए-करीमा की शाने नुजूल में मुफस्सीरीन ने हदीस-ए-पाक बयान फरमाई है -

“हज़रत अबु-हुरैरा (र.ज.) से रिवायत है कि जिस ने 18 ज़िल हज को रोज़ा रखा उसके लिए 60 महीनों के रोज़ों का सवाब लिखा जाएगा, और यह ‘गदीर-ए-खुम’ का दिन था जब हुजूर (अ.स.) ने हज़रत अली (र.ज.) का हाथ मुबारक पकड़ कर फरमाया : ‘क्या मैं मोमिनीन का वाली (जानों का मालिक) नहीं हूँ ?’ तो सबने कहा : ‘क्यों नहीं, या रसूल अल्लाह !’ तो आप (स.अ.व.ब.) ने फरमाया - ‘जिसका मैं मौला हूँ, उसका अली मौला है’”

इस पर ख़लीफा-ए-बरहक अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत उमर-ए-फारुक (र.ज.) ने फरमाया - ‘मुबारक हो ! ऐ जनाबे अली शेरे खुदा ! आप मेरे और हर मुसलमान के मौला ठहरे’ (इस मौके पर) अल्लाह ने यह आयत नाज़िल फरमाई।

{ख़तीب बग़दादी, तारीख-ए-बग़दाद, (8 : 290)}

{झाम फर्ख़दीन राज़ी, तफसीर-ए-कबीर, (11 : 139)}

{झब्बे असाकिर तारीख़े दमिश्क, अल कबीर (179 : 45) में यह रिवायत हज़रत अबु सईद ख़ुदरी (र.ज.) से भी ली है}

{इमाम जलालुद्दीन-सुयूती ने 'अद-दुर्रुल मनसूर की तपसीर बिल मासूर (259 : 2) में आयत मज़कूरह की शान-ए-नुजूल के हवाले से लिखा है कि जब हुजूर (अ.स.) ने गदीर-ए-खुम के रोज़ 'जिसका मैं मौला हूँ उसका अली मौला है' के अलफाज़ फरमाये तो यह आयते करीमा नाज़िल हुई}

नोट - यह आयत-ए-करीमा हज़रत मौला अली शेरे खुदा (क.व.क.) की शान में नाज़िल हुई, और हदीस-ए-पाक से सावित है, जो हुजूर (अ.स.) ने फरमाया, 'जिसका मैं मौला हूँ उसका अली मौला है'

तमाम कायनात के मौला (मालिक, आक़ा) हमारे नबी हैं, तो नबी ने ही फरमाया, 'जिसका मैं मौला हूँ उसका अली मौला है' तो जिस जिसके नबी मौला है, उस-उसके अली मौला (मालिक, आक़ा) हुए, इसलिए उन्हें मौला-ए-कायनात भी कहते हैं।

इसलिए एहले-इश्क़ ने मौला अली (अ.स.) की मारेफत-ओ-हकीकत जितनी उन पर वाज़ेह हुई उसको देखकर फरमाया - 'अली को कैसे मैं मौला-ए-कायनात कहूँ बड़ा है नाम-ए-अली, कायनात छोटी है'

यह हदीस-ए-ग़दीर-ए-खुम 'जिसका मैं मौला हूँ उसका अली मौला है' बहुत मशहूर-ओ-मारुफ हदीस-ए-पाक है।

यह हदीस कुतुब-ए-हदीस में मुतावातिर हदीस है, और जिसका इनकार इज्माअन मुमकिन नहीं (मुतावातिर हदीस - उसको कहते हैं जो हदीस कई बार अलग-अलग रावियों से बयान की गई हो।) इस हदीस-ए-पाक को 110 सहाबा-ए-किराम (र.ज.अ.) ने रिवायत किया है, और दूसरे कौल के मुताबिक 146 सहाबा-ए-किराम ने इस हदीस को रिवायत किया है।

2. “तुम्हरे वली नर्ही मग़र अल्लाह और उसका रसूल और ईमान वाले, कि नमाज़ कायम करते हैं, और ज़कात अदा करते हैं, जबकि वह अल्लाह के हुजूर खकू (नमाज़ की हालत में झुके हुए) किए हुए हैं”

(सूरह : अल-मायदह, आयत नं.-55)

- “हज़रत अम्मार बिन यासिर (र.ज.) से रिवायत है कि एक माँगने वाला (साईल) हज़रत अली (क.व.क.) के पास आकर खड़ा हुआ, हज़रत अली (क.व.क.) रुकू में थे (तो हज़रत अली (अ.स.) ने उसे इशारा किया रुकू की हालत में अपनी उंगली से यह अंगूठी निकाल लो), तो उसने हज़रत अली की उंगली मुबारक से वह अंगूठी निकाल ली, इस तरह आप (क.व.क.) ने अंगूठी साईल को अता फरमा दी, वह साईल हुज़र ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ की खिदमत में हाजिर हुआ और हुज़र (अ.स.) को इसकी खबर दी, इस मौके पर हुज़र (अ.स.) पर यह आयत-ए-करीमा नाज़िल हुई। आप ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ ने यह आयत की तिलावत फरमाई और फरमाया - ‘जिसका मैं मौला हूँ उसका अली मौला है, ऐ अल्लाह ! जो इसे दोस्त रखे तू भी उसे दोस्त रख और जो इस से अदावत (दुश्मनी) रखे तू उससे अदावत (दुश्मनी) रख’ {तबरानी-फी-मजमअल-औसत}

(इमाम अहमद इब्ने हम्बल-फी-उल मुस्नद, 01 / 119)

नोट - इस आयत में शाने विलायत-ए-मौला अली शेरे खुदा (अ.स.) का पता मिलता है, तो अल्लाह फरमा रहा है, इस आयत में कि ‘तुम्हारा हकीकी वली सिर्फ अल्लाह व रसूल ही है, और वह ईमान वाले जो नमाज़ कायम करते हैं, और ज़क़ात अदा करते हैं, जबकि वह रुकू की हालत में हैं,

तो यहाँ ईमान वाले से मुराद मौला अली (क.व.क.) हैं, तो इस आयत से यह पता चला के मोमिनीन के हकीकत में सिर्फ़ तीन ही वली हैं, पहला खुद अल्लाह है, दूसरे रसूल-ए-खुदा हुज़र पाक हैं, और तीसरे हज़रत मौला अली शेरे खुदा (क.व.क.) हैं, तो अब जो भी वली हुए या होंगे या जिसको भी विलायत का दर्जा मिलेगा, वह मौला अली (क.व.क.) के फैज़ान से मिलेगा, उनके सदके में मिलेगा, इसलिए सारे सलासिले तरीकत (जो बुजुर्गानेदीन के होते हैं) उनके पेशवा हज़रत मौला अली (क.व.क.) हैं, चाहे ग्रौस हों, कुतुब हो, अब्दाल हों, कलनदर हों (यह सारे अक्साम हैं दरजा-ए-विलायत के मर्तबे हैं) उन सब के पेशवा मौला अली शेरे खुदा (क.व.क.) हैं।

(सुह्नान-अल्लाह)

**3. “बेशक जो लोग ईमान लाएँ और नेक अमल किए तो अल्लाह
उनके लिए, लोगों के दिलों में मुहब्बत पैदा फरमा देगा”**

(सूरह : मरयम, आयत नं.-96)

- ‘हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास (र.ज.) से रिवायत है, वह फरमाते हैं, यह आयत हज़रत मौला अली शेरे खुदा (क.व.क.) की शान में नाज़िल हुई, और उन्होंने फरमाया इस से मुराद मोमिनीन के दिलों में मौला अली (अ.स.) की मुहब्बत है।’

(तबरानी-अल-मजमउल-औसत, 05 / 348, रक़म-5514)

नोट - तो यहाँ इस आयत में ‘मुहब्बत’ से मुराद हज़रत अली (र.ज.) की मुहब्बत है जो अल्लाह ने मोमिनीन के दिलों में डाली है।

वह लोग कितने खुश किसमत हैं कि जिनके क्लब (दिल) हज़रत मौला अली शेरे खुदा (क.व.क.) की मुहब्बत से मुनव्वर हैं, क्योंकि वह चुने हुए लोग हैं, जिनके दिलों में अल्लाह ने खुद मौला अली की मुहब्बत पैदा फरमाई है।

(सुह्नान-अल्लाह)

- 4. ‘हज़रत साअद बिन अबी वक्कास (र.ज.) बयान करते हैं कि हुज़ूर ‘सल्लाहो-अलैहै-वा-आलिही-वसल्लम’ ने गज़वये तबूक के मौके पर हज़रत अली (क.व.क.) को मदीना में छोड़ दिया था तो हज़रत अली (क.व.क.) ने अर्ज़ किया - या रसूल अल्लाह ! क्या आप मुझे औरतों और बच्चों में छोड़ कर जा रहे हैं ?**

तो हुज़ूर (अ.स.) ने फरमाया : “क्या तुम इस बात पे राज़ी नहीं कि मेरे साथ तुम्हारी वही निस्बत है, जो हज़रत हारून (अ.स.) की हज़रत मूसा (अ.स.) से थी, अलबत्ता मेरे बाद कोई नबी नहीं होगा ।”

(यह हदीस मुत्तफक अलैह है यानी बुखारी व मुस्लिम शरीफ दोनों कुतुबे हदीस में है ।)

(बुखारी फी-अस-सहीह, 04 / 1602, रक़म-4154,
मुस्लिम फी-अस-सहीह, 04 / 1871, रक़म-1870)

- 5.** 'हज़रत उम्मे सुलैम (र.ज.) से रिवायत है कि नबी करीम 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' ने इरशाद फरमाया -

‘ऐ उम्मे सुलैम ! अली का गोश्त मेरा गोश्त है, और अली का खून मेरा खून है, और इसकी निस्बत मुझसे वही है, जो हज़रत हारून (अ.स.) की हज़रत मूसा (अ.स.) से थी ।’

(कनजुल उम्माल, जिल्द-1, सफा-127)

- 6.** हज़रत सलमान फारसी (र.ज.) से रिवायत है कि नबी करीम 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' ने इरशाद फरमाया -

‘ऐ अली ! तुझसे मुहब्बत करने वाला मुझसे मुहब्बत करने वाला है, और तुझसे बुग्ज़ रखने वाला मुझसे बुग्ज़ रखने वाला है ।’

(तबरानी-फी-मजमउल कबीर, जिल्द-6, सफा-239, हदीस-4097)

- 7.** 'हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (र.ज.) बयान करते हैं कि हुजूर 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' ने इरशाद फरमाया -

‘मैं इल्म का शहर हूँ, और अली उसका दरवाज़ा है, लिहाज़ा जो उस शहर में दाखिल होना चाहता है उसे चाहिए कि वह दरवाज़े से आए ।’

इस हदीस को इमाम हाकिम ने रिवायत किया है और फरमाया कि यह हदीस सहीह-उल-इस्नाद है ।

(हाकिम फी-अल मुस्तदरक, 03 / 137, रक्म-4637)

- 8.** हज़रत अब्दुल्लाह बिन नुज्य्य अल हदरमीं (र.ज.) अपने वालिद से एक तवील रिवायत में बयान करते हैं कि मुझे हज़रत अली (क.व.क.) ने फरमाया -

‘हुजूर 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' की बारगाह-ए-अक्दस में मेरा एक खास मकाम-ओ-मरतबा था जो मख़्लूकात में से किसी और का नहीं था ।’

इस हदीस को हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल (र.ह.) ने अपनी मुस्नद में रिवायत किया है ।

(अहमद बिन हम्बल फी-अल-मुस्नद, 1 / 85, अल हदीस, रक्म-647)

- 9.** हुँजूर 'सल्लाहो-अलैहे- वा-आलिही-वसल्लम' ने इरशाद फरमाया :

'हज़रत अली (क.व.क.) का यौमे खनदक मुकाबला करना क्यामत तक कि मेरी उम्मत के आमाल से अफज़ल है।'

(मदारिजुन्न-नुबुव्वत, जिल्द-2, सफा-223)

- 10.** हज़रत इमरान (र.ज.) एक रिवायत में बयान करते हैं कि हुँजूर (अ.स.) ने फरमाया : "बेशक अली मुझसे है, और मैं अली से हूँ, और मेरे बाद हर मोमिन का बली है।"

(तिरमिजी-फी-अल जामी अस-सहीह, 05 / 632, अल हदीस, रकम-3712)

- 11.** "उम्मुल मोमिनीन (उम्मत की माँ) हज़रत अम्मा आईशा सिद्दीका (स.अ.) बयान करती हैं, जब हज़रत अली (र.ज.) हमारे घर आते तो मेरे बाबा जान खलीफा-ए-ब्रहक, अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत अबु-बकर सिद्दीक (र.ज.) सारे काम छोड़ के हज़रत अली (क.व.क.) का चेहरा देखते तो मैं कहती थी, 'बाबा जान आप मेरे घर आते हो और चेहरा हज़रत अली (र.ज.) का देखते रहते हैं, इसकी क्या वजह है ?'

तो हज़रत अबु-बकर सिद्दीक (र.ज.) ने फरमाया - 'बेटी, ग़लती न कर मैंने अपने कानों से नबी-ए-करीम 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' से सुना है -

"अली का चेहरा देखना इबादत है"

(किताब रियाजुनन ज़रह-फी-अशशरह-मुबशशरह, जिल्द-2, सफा-445)

- 12.** हुँजूर 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' ने इरशाद फरमाया -

'अली कुरआन के साथ हैं, और कुरआन अली के साथ है, यह दोनों एक दूसरे से कभी जुदा नहीं होंगे, हत्ता के हौज़-ए-कौसर पर मेरे पास आ मिलें।

(मुस्तदरक अल-हकीम # 4604)

- 13.** हज़रत इब्ने अब्बास, हज़रत इब्ने मसठद, हज़रत अबुज़र (र.ज.अ.) का मुताफ़िका बयान है कि -

‘हज़रत अमीर-उल-मोमिनीन इमाम अली (अ.स.) की शान-ए-पाक में जिस कसरत से आयतें नाज़िल हुई हैं, किसी की शान में न आई हैं।’

और हज़रत इब्ने अब्बास (र.ज.) मज़ीद इरशाद फरमाते हैं -

‘हज़रत इमाम अली (अ.स.) की शान में ‘300’ आयतें कुरआन-ए-पाक में नाज़िल हुई हैं।’

(कन्जुल-उम्माल, जिल्द-2, सफा-153)

(इब्ने-असाकिर-फी-तारीख़ दिमश्क़-अल कबीर-42 / 363, 42 / 364)

- 14.** उम्मुल मोमिनीन हज़रत अम्मा आईशा सिद्दीका (स.अ.) फरमाती हैं कि हुज़र-ए-पाक ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ ने फरमाया - ‘हज़रत अली का जिक्र इबादत है।’

(कन्जुल उम्माल, जिल्द-11, सफा-601, हदीस-32994)

- 15.** हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास (र.ज.) फरमाते हैं, कुरआन-ए-करीम में जिस जगह (ऐ ईमान वालों !) का खिताब वारिद है, वहाँ समझ लेना चाहिए कि हज़रत मौला अली (र.ज.) उनमें सबसे अब्बल और उस गिरोह के सरदार और रईस हैं, अल्लाह ने जहाँ भी मौला अली का जिक्र फरमाया ख़ैर के साथ फरमाया है।

(इमाम जलालुद्दीन सियूती, तरीखुल-खुलफा, सफा-258)

इल्मे हज़रत मौला अली (क.व.क.)

1. हज़रत मौला अली (अ.स.) का फरमान है -

“मुझसे कितावे खुदा (कुरआन शरीफ) के बारे में सवाल करो, कसम खुदा की कोई आयत ऐसी नहीं जिसके मुतालिक मुझे इल्म न हो के वह दिन के उजाले में नाज़िल हुई या रात की तारीकी में या पहाड़ पर नाज़िल हुई या मैदान में।”

(इन्ने-सअद-फी-अत-तबाकात-उल-कुबरा, 02 / 338)

(सवाइक अल-मुहर्रिका, सफा-76, 77)

(तबाकात इन्ने साअद, जिल्द-2, सफा-101)

2. हज़रत मौला अली (अ.स.) ऐलान फरमाते थे -

‘जो कुछ पूछना है मुझसे पूछ लो’।

मौला अली ने यह तमाम उलूम अदीब लबीब *وَعِلْمُكَ مَالِكٌ تَكُنْ تَعْلِمُ* हुजूर सरवरे कायनात सल्लाहो अलैहि वा आलिही वसल्लम के मक्तब से सीखे हैं, हज़रत मौला इमाम अली (अ.स.) के सीना मुबारक पर सरकारे दो-जहाँ नबी करीम ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ ने अपना दरस्ते रहमत फेर कर दुआ दी -

“इलाही ! इन के क़ल्ब को रौशन फरमा दे”

(तारीखुल-खुलफा, सफा-311)

बाब

फज़ाईल-ओ-मनाकिब हज़रत ख़ातूने जन्त सच्चदा फातिमा ज़हरा (र.ज.) का व्याप

1. (i) हुज़र 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' ने इरशाद फरमाया -

"बेशक फातिमा मेरी जान का हिस्सा है"

(अद-दुर्रतुल-बैदा-फी-मनाकिबी-फातिमा-तु-ज़हरा (स.अ.) 11-13)

(ii) हज़रत मिसवर बिन मख्भमा (र.ज.) से रिवायत है कि हुज़र नबी करीम 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' ने फरमाया -

"फातिमा मेरी जान का हिस्सा है, बस जिस ने उसे नाराज
किया उसने मुझे नाराज किया।"

(बुख़ारी शरीफ-फी-सहीह, जिल्द-5, रकम-3767)
2. सच्चदा ख़ातूने जन्त (स.अ.) तमाम जहानों की औरतों की सरदार हैं -

"हज़रत उम्मुल मोमिनीन बीबी आइशा सिदीका (स.अ.) से रिवायत है कि हुज़र 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' ने फरमाया -

"ऐ फातिमा ! क्या तुम इस बात से राज़ी नहीं हो कि तुम तमाम जन्नती
औरतों, मेरी इस उम्मत की तमाम औरतों और मोमिनीन की
तमाम औरतों की सरदार हो"

(नसाई शरीफ-फी-सुनन-अल-कुबरा, 04 / 251, रकम-7078)
(हाकिम-अल-मुस्तदरक, जिल्द-3, रकम-4740)

नोट - इसलिए हज़रत ख़ातूने जन्नत सय्यदा-ए-कायनात फातिमा ज़हरा (स.अ.) को ख़ातूने जन्नत और सय्यदा-ए-कायनात (यानी सारे जहानों की औरतों की सरदार) कहते हैं। (सुब्हान-अल्लाह)

- 3.** ‘उम्मुल मोमिनीन हज़रत अम्मा आईशा सिद्दीका (स.अ.) रिवायत करती हैं कि मैंने हुजूर ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ की साहबज़ादी हज़रत सय्यदा-ए-कायनात फातिमा ज़हरा (स.अ.) से बढ़ कर किसी को आदत व अतवार (तौर तरीका), सीरत व किरदार और नशिस्त व बरखास्त (उठने व बैठने में) आप (स.अ. वा.व.) से मुशाबिहत (मिलता-जुलता) रखने वाला नहीं देखा।’

(तिरमिज़ी शरीफ-फी-सुनन, 05 / 700, रक़म-3972)

- 4.** शाने जनाबे सय्यदा-ए-कायनात फातिमा ज़हरा (स.अ.) -

‘उम्मुल मोमिनीन हज़रत आईशा सिद्दीका (स.अ.) बयान करती हैं - जब हज़रते ख़ातूने जन्नत सय्यदा फातिमा ज़हरा (स.अ.) हुजूर पाक ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ की खिदमत-ए-अक़दस में हाजिर होती तो हुजूर (अ.स.) हज़रत सय्यदा फातिमा ज़हरा (स.अ.) को खुश-आ-मदीद कहते, खड़े होकर उनका इस्तिकबाल करते, उन का हाथ मुबारक पकड़ कर बोसा देते और उन्हें अपनी नशिस्त पर बैठा लेते।’

(हाकिम-फी-अल-मुस्तदरक-अला-सहीहैन, 03 / 167, रक़म-4732)

- 5.** ख़लीफा-ए-बरहक हज़रत अमीर-उल-मोमिनीन उमर-ए-फारूक (र.ज.) से मरवी है कि हुजूर पाक ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’, हज़रत ख़ातूने जन्नत सय्यदा फातिमा ज़हरा (स.अ.) से फरमाते थे -

‘फातिमा ! मेरे माँ बाप तुझ पर कुरबान हो’

(अद-दुर्रत-उल-बैदा-फी-मनाकिबी फातिमा ज़हरा 34 /, रक़म-19)

(मुस्तदरक-अला-सहीहैन)

शेर - “यह कौन आया यह कौन आया कि इस्तिकबाल को सब अम्बिया उठे, न बैठेगा कोई तब तक न जब तक जनाबे सय्यदा फातिमा (स.अ.) बैठें”

नोट :- इस हदीस-ए-पाक से पता चलता है कि जनाबे सय्यदा का क्या मकाम-ओ-मरतबा है। सारे सहाबा-ए-कराम (र.ज.अ.) जब हुजूर (अ.स.) की जियारत करते तो वह सब यू अर्ज करते -

“या रसूल अल्लाह मेरे माँ बाप आप पर कुरबान हो” लेकिन जब भी जनाबे सय्यदा-ए-पाक फातिमा ज़हरा (स.अ.) हुजूर (अ.स.) के पास आती तो खुद हुजूर (अ.स.) यह फरमाते ‘ऐ फातिमा ! मेरे माँ बाप तुझ पर कुरबान हो।’ (सुह्ना-अल्लाह)

6. हज़राते हसनैन करीमैन हुजूर ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ की औलाद हैं -

ख़लीफा-ए-बरहक अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत उमर-ए-फारूक (र.ज.) फरमाते हैं मैंने हुजूर नबी करीम ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ को यह फरमाते हुए सुना -

“हर औरत की औलाद का नसब अपने बाप की तरफ से होता है,
सिवाए औलाद-ए-फातिमा के, कि मैं ही उनका नसब हूँ
और मैं ही उनका बाप हूँ”

(तबरानी-फी-मजमउल-कबीर, 03 / 44, रक़म-2631)

नोट - इस हदीस-ए-पाक से यह साबित हुआ कि हज़रत सय्यदा फातिमा ज़हरा की औलाद हुजूर (अ.स.) की ही औलाद हैं, इसलिए हज़राते हसनैन करीमैन और उनकी नस्ले पाक को आले रसूल कहा जाता है।

7. हज़रत आईशा सिद्दीका (र.ज.) फरमाती हैं कि मैंने जनाबे सय्यदा-ए-कायनात हज़रत ख़ातूने जन्नत फातिमा ज़हरा (स.अ.) से अफजल उनके बाबा (यानी हुजूर ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’) के अलावा किसी शख्स को नहीं पाया

(तबरानी-फी-अल-मजमउल-औसत, 03 / 137, रक़म-2721)

8. ख़लीफा-ए-बरहक मौलाए-कायनात अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत मौला अली शेरे खुदा (क.व.क.) से रिवायत है कि हुजूर पाक ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ ने हज़रत ख़ातूने जन्नत सय्यदा फातिमा ज़हरा (र.ज.) से फरमाया -

“बेशक अल्लाह तेरी नाराज़ी पर नाराज़ और
तेरी रज़ा पर राज़ी होता है।”

(हाकिम-फी-अल-मुस्तदरक अला-सहिफैन, 03 / 167, रक़म-4730)

9. अल्लाह ने जनाबे सच्चदा फातिमा ज़हरा (स.अ.) और उनकी ऐलाद (यानी सच्चद जादों) पर जहन्नम की आग हराम कर दी -

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास से रिवायत है कि हुँजूर पाक ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ ने हज़रत फातिमा ज़हरा (स.अ.) से फरमाया -

“अल्लाह तआला तुम्हें और तुम्हारी ऐलाद (यानी हसनी और हुसैनी सच्चद जादगान) को आग का अज़ाब नहीं देगा”

(तबरानी-फी-मजमउल-कबीर, 11 / 210, रक़म-11685)

10. अल्लाह ने जनाबे सच्चदा फातिमा ज़हरा (स.अ.) और उनसे (मुहब्बत-ओ-ताल्लुक) रखने वालों को भी जहन्नम से आज़ाद कर दिया है।

हुँजूर नबी करीम ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ ने इशाद फरमाया -

‘मैंने अपनी बेटी का नाम ‘फातिमा’ इसलिए रखा है, कि अल्लाह तआला ने इस पर (जनाबे सच्चदा फातिमा (स.अ.)) और इनकी ऐलाद पर और इसके चाहने वालों व निस्खत रखने वालों पर जहन्नम की आग को हराम करार दिया है।’

(इमाम हिन्दी, अल-कन्जुल उम्माल, जिल्द-12, सफा-50, हदीस-34222)

(इमाम दैलमी, अस मुस्नद-उल-फिरदौस, जिल्द-01, सफा-346, हदीस-1385)

(इमाम हैतमी अल-सवाइक अल-मुहर्रिका, सफा-540)

(इमाम मुल्लाह अली क़ारी, शरा-ए-फिक़ह-ए-अक़बर, सफा-133)

हज़रत इमाम हसन (अ.स.) और हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.) के जामेअ मनाकिब का बयान

1. हुजूर नबी करीम 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' ने फरमाया -

"हुसैन मुझसे है, और मैं हुसैन से हूँ"

(तिरमिज़ी शरीफ, जिल्द-2, सफा-219)

नोट - तो इस हदीस-ए-पाक से वाज़ेह तौर पर पता चलता है कि जबसे हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.) ने इस आलम में अपनी नुफूसे नूरानियत के साथ जलवा गरी फरमाई, तब से 'वाकिये क्रबला' तक हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.) हुजूर पाक 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' से हैं, और 'वाकिये क्रबला' के बाद हुजूर 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' का दीन हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.) से है।

'क़तले हुसैन (अ.स.) असल में मरगे यजीद है।

इस्लाम ज़िंदा होता है, हर क्रबला के बाद ॥

2. मेरा यह बेटा (इमाम हसन (अ.स.)) सरदार है -

हज़रत हसन बसरी (र.ज.) ने बयान किया है कि मैंने हज़रत अबु बक़राह (र.ज.) को बयान करते हुए सुना है कि - 'मैंने रसूल-अल्लाह 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' को मिस्वर पर देखा और हज़रत इमाम हसन बिन अली (अ.स.) आप के पहलू में थे, हुजूर (अ.स.) कभी लोगों की तरफ मुतावज्जो होते और कभी हज़रत इमाम हसन (अ.स.) की तरफ रुख करते, और फरमाया कि -

“मेरा यह बेटा सच्चिद (सरदार) है, और शायद अल्लाह इसके ज़रिये से मुसलमानों की दो बड़ी जमाअतों के दरमियान सुलह करा देगा।”

मुझसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया कि हज़रत इमाम हसन बसरी (र.ज.) का हज़रत अबु बक़राह से सुन्ना मेरे नज़दीक उसी हदीस से सावित है।

(सहीह बुखारी शरीफ, जिल्द-1, किताब-उस-सलाह)

नोट - हज़रत इमाम हसन (अ.स.) वह हैं, जिनको सरकार-ए-दो-आलम नबी करीम ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ अपने मिस्त्र पर अपने साथ बैठा कर उनकी सरदारी का ऐलान कर रहे हैं, तो यह हुज़ूर (अ.स.) के कौल से मालूम हुआ कि इमाम हसन (अ.स.) पूरी उम्मत के सरदार हैं।

3. जन्नती नौ-जवानों के सरदार - हज़रत उमर (र.ज.) से मरवी है कि हुज़ूर पाक ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ ने फरमाया -

“हसन और हुसैन तमाम जवानाने जन्नत के सरदार हैं”

(तबरानी-फी-अल-मजमउल-कबीर, 03 / 35, रक़म-2598)

नोट - तो हज़रते हसनैन करीमैन (अ.म.स.) जन्नती नौ-जवानों के सरदार हैं, और उल्मा हक़ फरमाते हैं कि जन्नत में बूढ़ा कोई नहीं जाएगा, यानि सब जवान होंगे, तो हज़रते हसनैन करीमैन (अ.म.स.) तमाम जन्नतियों के सरदार हैं। (सुब्हान-अल्लाह)

तो जो इनकी बेअदबी करे और इनसे बुग़ज़-ओ-अदावत रखे और फिर जन्नत की तमन्ना करे, यह तो अजीब-ओ-गुरीब बात है क्योंकि जन्नत के मालिकों से बुग़ज़ रखकर जन्नत की तमन्ना करना बेकार है, हाँ जन्नत उसकी है, जो इनसे मुहब्बत-ओ-निस्बत रखता है।

‘अल्लाह हमारा ख़ातम इनकी मुहब्बत पर करे - आमीन’

4. हज़रत मौला इमाम अली अलैहिस्सलाम से रिवायत है -

“हज़रत इमाम हसन (अ.स.) सर से सीने तक हुज़ूर पाक ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ के ज़्यादा मुशाबेह (मिलते-जुलते) थे और हज़रत इमाम

हुसैन (अ.स.) सीने के नीचे से पाँव तक हुजूर 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' के ज्यादा मुशाबेह थे ।"

(तिरमिज़ी शरीफ-05 / 660)

(मुस्नद अहमद बिन हम्बल, 1 / 99, रक्म-774)

'एक दिन हज़रत अबु बकर सिद्दीक़ (र.ज.) मस्जिद-ए-नबवी में नमाज़ पढ़ कर बाहर निकले और मौला अली शेरे खुदा (क.व.क.) भी साथ थे और इमाम हसन (अ.स.) खेल रहे थे, हज़रत अबु-बकर सिद्दीक़ (र.ज.) ने उनको अपने कन्धे पर उठा लिया और हज़रत मौला अली (र.ज.) को बतौर-ए-खुश तबिई फरमाया कि -

"ऐ जनाबे अली ! हसन तो बिल्कुल रसूल-अल्लाह 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' के मुशाबेह हैं, आपके मुशाबेह नहीं हैं, (इस पर) हज़रत मौला अली (अ.स.) ने जब सुना तो तबस्सुम फरमाने लगे ।"

(अल बिदाया बन-निहाया, जिल्द-8, सफा-33)

5. हज़रत अबु हुरैराह (र.ज.) से मरवी है कि नबी करीम 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' ने इरशाद फरमाया -

"जिसने हसन और हुसैन से मुहब्बत की, उसने दर हकीकत मुझ ही से मुहब्बत की और जिसने इनसे बुग़ज़ रखा उसने मुझसे बुग़ज़ रखा ।"

(सुनन-ए-इब्ने माजा-बाब फज़ाईल-उ-सहाबा, 51:1, रक्म-143)

- नोट - इस हदीस-ए-पाक से पता चला कि जो दावा करता है इश्के रसूल का और उसका दिल हसनैन करीमैन (अ.म.स.) की मुहब्बत से खाली है, तो उसका दावा झूठा है, हज़राते हसनैन करीमैन से मुहब्बत दर हकीकत हुजूर (अ.स.) से मुहब्बत है। और इनसे बुग़ज़-ओ-अदावत हकीकत में हुजूर (अ.स.) से बुग़ज़-ओ-अदावत है।

6. हज़रत अबु हुरैराह (र.ज.) से रिवायत है कि रसूल-अल्लाह 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' ने हज़रत इमाम हसन (अ.स.) से फरमाया -

“ऐ अल्लाह ! मैं इससे मुहब्बत करता हूँ, तू भी इससे (यानी
इमाम हसन (अ.स.)) मुहब्बत कर,
और जो इससे मुहब्बत करे उससे भी मुहब्बत कर”

(सुनन इब्ने माजाह, जिल्द-1, सफा-142)

नोट - हज़रत इमाम हसन (अ.स.) की मुहब्बत व पंजतन पाक की मुहब्बत वह है, जिसको रखने से बन्दा अल्लाह का मेहबूब बन्दा हो जाता है (यानि अल्लाह का प्यारा बन्दा होकर उसके कुरबे ख़ास से आरास्ता हो जाता है।)

“अल्लाह-अल्लाह करने से सिर्फ, अल्लाह नहीं मिलता,
यह अल्लाह वाले हैं जो अल्लाह से मिला देते हैं ॥”

7. अर्श के दो सुतून - हज़रत उक्बाह बिन अमीर से मरवी है कि रसूल अल्लाह ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ ने फरमाया -

“हसन और हुसैन (अ.म.स.) अर्श के दो सुतून (खम्बे) हैं लेकिन वह लटके हुए नहीं, और सरकारे दो जहाँ (स.अ.वा.व.) ने इरशाद फरमाया - ‘जब एहले जन्नत ! जन्नत में भेज दिये जाएँगे, तो जन्नत अर्ज करेगी - या अल्लाह, तूने मुझे अपने सुतूनों में से 2 सुतून देने का वाअदा किया था, वह कहाँ है ? तो अल्लाह फरमाएगा - मैंने तुझे हसन-ओ-हुसैन (अ.म.स.) की मौजूदगी के जरिये तुझे मुज़य्यन (सजाया) नहीं कर दिया (यही तो मेरे दो सुतून हैं) ।’”

(तबरानी मजमउ-ल-ऑसत, इमाम तबरानी, 108 / 1)

(इमाम हैतनी-मजमउ-ज़-ज़वाइद, 184 / 9, सफा-15092)

सबसे एहम् सुन्नते रसूल (स.अ.वा.व.)

हज़रत उम्मे अतिया (र.ज.) फरमाती हैं कि रसूल-अल्लाह 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' ने एक लश्कर भेजा उसमें हज़रत मौला अली शेरे खुदा (कर्मल्लाहो-वजह-उ-लकरीम) भी थे (तो) मैंने नबी करीम 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' को देखा के हुज़ूर 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' अपना मुबारक हाथ उठा कर दुआ कर रहे थे कि,

“या अल्लाह ! मुझे उस वक्त तक मौत न देना जब तक
‘अली’ को न देख लूँ”

(जामेअ़ तिरमिज़ी, 05 / 643, रक्म-3737)

नोट - इस हदीस-ए-पाक से यह वाज़ेह हुआ कि दीदार-ए-मौला अली (क.व.क.) के लिए दुआ करना सबसे एहम् सुन्नतों में से है, हुज़ूर (अ.स.) ने खुद दीदारे मौला अली की दुआ की है, तो दुआ वह कर रहे हैं जिनके सदके में तमाम आलमीन की दुआ-एँ कुबूल होती हैं (सुभ्वान-अल्लाह)। तो दीदारे मौला अली की दुआ करना और दीदार की तमन्ना रखना सुन्नते रसूल (स.अ.वा.व.) है।

‘तो यह आशकार हुआ कि क़ल्ब-ए-रिसालत की चाहत मौला अली-ए-मुर्तजा (र.ज.) की ज़ात-ए-पाक है।’

तो आईये हम सब यह एहम् सुन्नत अदा करें।

“या अल्लाह ! अपने हबीब के सदके में हमको उस वक्त तक मौत
न देना जब तक मौला अली शेरे खुदा (क.व.क.) के जलवे
का दीदार नसीब न हो” (आमीन)

मुहब्बते-एहलेबैत-ए-अतहर (अ.मु.स.)

- खलीफा-ए-राशिद अमीरुल-मोमिनीन यारे ग़ारे नबी हज़रत अबु-बकर सिद्दीक (र.ज.) ने फरमाया -

“नबी करीम ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ को खुश करो
आपकी एहलेबैत को खुश करके”

(सही बुखारी शारीफ, सफा-3751)

नोट - हज़रत अबु-बकर सिद्दीक (र.ज.) किस क़दर एहलेबैत से मुहब्बत व उनकी खिदमत करते थे, कि उम्मत को भी यही हिदायत फरमा रहे हैं कि ‘एहलेबैत से मुहब्बत करो उनकी खिदमत करके उनका कुर्ब हासिल करो और उनको खुश रखो’। बेशक हज़रत अबु-बकर सिद्दीक (र.ज.) को यह मकाम-ओ-मर्तबा मुहब्बत-ए-रसूल-ओ-आले रसूल ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ से मिला है।

- तो एहलेबैत से मुहब्बत रखना हुज़ूर (अ.स.) और सहाबा-ए-किराम (र.ज.) की सबसे एहम सुन्नत है और अजरे रिसालत भी है।

- इमामुल फुक़ह सहाबि-ए-रसूल हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसउद (र.ज.) फरमाते हैं -

“एहलेबैत की एक दिन की मुहब्बत एक साल की इबादत
(नफ़ली इबादत) से बेहतर है, और जो इसी मुहब्बत पर
फौत (मरा) हुआ वह जन्नत में दाखिल हो गया”

(अखरजुहुद-दैलमी-फी-मुस्नद-उल-फिरदौस, रक़म-2821, 172/2)

नोट - अब गौर तलब बात यह है कि जो एहलेबैत से मुहब्बत करेगा, वह जरूर शरियत-ओ-सुन्नत का पाबंद होगा, और अगर एहलेबैत से दिलो-जान से मुहब्बत

करता है पर आमाल की कमी है (यानि पाबन्दे शरअ शरीफ़ नहीं है) तो मरने से पहले वह रसूल-ओ-आले रसूल की मुहब्बत के सदके में पाबन्दे शरियत-ओ-सुन्नत हो जाएगा (इंशा-अल्लाह) और उसको मरते वक्त कलिमा व तौबा नसीब होगा। तभी अल्लाह उसे जन्नत में डालेगा, यह एहलेबैत की मुहब्बत का सदका है, जो इस उम्मत को मिला है।

(सुब्हान-अल्लाह)

3. हज़रत हसन बिन अली (अ.स.) बयान करते हैं कि हुज़ूर 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' ने फरमाया -

“हम एहलेबैत की मुहब्बत को लाज़िम पकड़ो, बस बेशक वह शख्स जो इस हाल में अल्लाह से मिला कि वह हमें मुहब्बत करता था, तो वह हमारी शफाअत के सदके में जन्नत में दाखिल होगा और उस जात की कसम जिसके कब्जा-ए-कुदरत में मेरी जान है किसी शख्स को उसका अमल फाएदा नहीं देगा मगर हमारे हक़ की मारेफत के सबब”

(तबरानी-फी-मजमउ-ल-औसत, 02 / 360, रक़म-2230)

नोट - इस हदीस-ए-पाक में एहलेबैत से मुहब्बत करने की हिदायत दी जा रही है, और इससे यह भी पता चलता है कि आमाल किसी के भी हो उसको काम न आएँगे (मसअलन - नमाज़, रोज़ा, हज, ज़क़ात, सदाक़ात) बगैर मुहब्बते रसूल-ओ-आले रसूल 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' के।

4. हज़रत अबु-हुरैरा (र.ज.) से रिवायत है कि नबी करीम 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' ने फरमाया -

“तुम में से बेहतरीन वह है, जो मेरे बाद मेरी एहलेबैत के लिए बेहतरीन है”

(हाकिम-फी-अल-मुस्तदक, 03 / 352, रक़म-5359)

- 5.** हज़रत अब्दु-र-रहमान बिन लैला (र.ज.) अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हुजूर 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' ने फरमाया -

“कोई बंदा उस वक्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उस के नज़दीक उस की जान से भी मेहबूब तर न हो जाऊँ और मेरी 'एहलेबैत' उसे उसके एहले ख़ाना (घर वालों) से महबूब तर न हो जाए और मेरी औलाद उसे अपनी औलाद से बढ़ कर मेहबूब न हो जाएँ और मेरी जान उसे अपनी ज़ात से महबूब तर न हो जाए”

(तबरानी-फी-अल-मजमउ-ल-कबीर, 07 / 75, रक़म-6416)

- 6.** हज़रत मौला अली शेरे खुदा (क.व.क.) फरमाते हैं कि हुजूर नबी करीम 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' ने हज़रत हसन व हज़रत हुसैन (अ.म.स.) का हाथ मुबारक पकड़ा और फरमाया -

“जिसने मुझे महबूब रखा और इन दोनों (यानी हसनैन करीमैन (अ.म.स.)) और इनके वालिद (यानी हज़रत मौला अली (र.ज.)) और इनकी वालिदा (हज़रत सय्यदा फातिमा ज़हरा (स.अ.)) को महबूब रखा वह क़्यामत के दिन मेरे साथ मेरे दरजे में होगा।”

(मुस्नद अहमद बिन हम्बल, जिल्द-1, सफा-77)

- 7.** हुजूर नबी करीम 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' ने इरशाद फरमाया -

“एहलेबैत की मुहब्बत से मेरी मुहब्बत नसीब होती है, और मेरी मुहब्बत से अल्लाह की मुहब्बत नसीब होती है।”

(हाकिम-अल-मुस्तदरक, जिल्द-3, सफा-181, रक़म-477)

नोट - एहलेबैत की मुहब्बत एक ऐसा सिलसिला है, जो हमें अल्लाह-ओ-रसूल की मुहब्बत तक ले जाता है, यह मुहब्बत-ए-एहलेबैत हर हाल में लाज़िम है और आयते कुरआनी से फर्ज है।

- 8.** हुजूर 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' ने इरशाद फरमाया -

“कि अपनी औलाद को तीन बातों का अदब सिखाओ - (i) अपने नबी

मुहब्बत का, (ii) उनकी एहलेबैत की मुहब्बत का, (iii) और कुरआन-ए-पाक की किरआत की मुहब्बत का’’

(सवाइक-अल-मुहर्रिका, सफा-577)

बाब

एहलेबैत मिस्ले कश्ती-ए-हज़रत नूह (अ.स.)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (र.ज.) से रिवायत है कि हुज़ूर ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ ने फरमाया -

“मेरी एहलेबैत की मिसाल हज़रत नूह (अ.स.) की कश्ती की सी है,
जो इस में सवार हो गया वह निजात पा गया और जिसने
इन्हें छोड़ दिया वह गर्क हो गया”

और एक रिवायत में हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (र.ज.) से मरवी है कि फरमाया -

‘जो इस में सवार हुआ वह सलामती पा गया और जिसने उसे
छोड़ दिया, वह गर्क (दूब गया) हो गया’

(तबरानी-फी-अल-मजम-उल-कबीर, 12 / 34,
रक़म-2388, 2639, 2638, 2636)

नोट - इस हदीस-ए-पाक से साबित है कि जिस तरह कश्ती-ए-हज़रत नूह (अ.स.) निजात का ज़रिया थी, कि जो उसमें सवार हुआ सलामती पा गया, ठीक उसी तरह हुज़ूर (अ.स.) की एहलेबैत है, जिसने इन पाक हस्तियों से निस्खत-ओ-ताल्लुक को

कायम कर लिया बस वही सलामती पाएगा, और जिसने ऐसा न किया तो वही शख्स तबाह होने वालों में से है। तो एहलेबैत से निस्खत-ओ-ताल्लुक को कायम करने के लिए यह औलिया-अल्लाह के सलासिले तरीक़त हैं जो कि सब हज़रत मौला अली शेरे खुदा (अ.स.) के फैज़-ए-रुहानी से लबरेज है, तो चाहे कोई सिलसिला-ए-तरीक़त हो (क़ादरी, चिश्ती, नक़शबन्दी, सोहरवरदी, अशरफी, वारसी) यह सारे सलासिले तरीक़त पंजतन पाक के फैज़ान से जारी हैं, तो किसी भी सिलसिले के कामिल पीर से बैअत हो जाना, एहलेबैत की गुलामी में शामिल कर देता है बर्शति के पीर इस तरफ रहनुमाई करे।

बाब

कुरआन और एहलेबैत

हज़रत ज़ैद बिन साबित (र.ज.) बयान करते हैं कि हुज़ूर 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' ने इरशाद फरमाया -

“बेशक मैं तुम मैं दो नायाब छोड़ कर जा रहा हूँ - एक अल्लाह की किताब जो कि आसमान व ज़मीन के दरमियान फैली हुई रस्सी (की तरह) है और दूसरी मेरी इतरत (यानी मेरी एहलेबैत) और यह कि यह दोनों उस वक़्त तक हरगिज़ जुदा नहीं होंगे जब तक यह मेरे पास हौज़-ए-कौसर पर नहीं पहुँच जाते।”

इस हदीस को इमाम अहमद बिन हम्बल (र.ह.) ने रिवायत किया है -

(अहमद बिन हम्बल-फी-अल-मुस्नद, 05 / 181, रक़म-21618)

नोट - इस हदीस-ए-पाक से यह बिल्कुल वाज़ेह है कि एहलेबैत पूरी उम्मत के लिए हिदायत है न कि सिर्फ एक फिर्के मख्सूस के, क्योंकि हुज़ूर (अ.स.) ने खुद ज़मानत दी

है कि इनका दामन थामे रहोगे तो कभी भी गुमराह नहीं होगे। और जब वाक्या-ए-करबला में हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.) को शहीद कर दिया गया और उनका सर-ए-अक़दस नेज़े की नोक पर रखा गया तो सच्चदु-श-शुहदा हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.) उसी नेज़े की नोक पर अपने कटे हुए सर मुबारक से तिलावते कुरआन शरीफ फरमा रहे थे, तो इससे यह भी साफ (Clear) हो गया कि हुज़ूर (अ.स.) ने फरमाया कि 'कुरआन-ओ-एहलेबैत एक दूसरे से कभी जुदा नहीं होंगे' तो हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.) ने अपने जह-ए-आला की इस हदीस की तशीह करबला में कर दी है कि सर जिसम से जुदा हो गया मगर हुसैन कुरआन से जुदा न हो सका।

(सुह्नान-अल्लाह)

बाब

मोमिन और मुनाफिक की पहचान

हज़रत जिर बिन हुबैश (र.ज.) रिवायत करते हैं कि हज़रत मौला अली शेरे खुदा (क.व.क.) ने फरमाया -

"कसम है उस ज़ात की जिसने दाना चीरा और जिसने जानदारों को पैदा किया। हुज़ूर 'सल्लाहो-अलैहे-वा- आलिही-वसल्लम' ने मुझ से एहद (वाअदा) फरमाया था कि मुझ से सिर्फ मोमिन ही मुहब्बत करेगा और सिर्फ मुनाफिक ही मुझ से बुग़ज़ रखेगा"

(सहीह मुस्लिम शरीफ - 1 / 86, हदीस रक़म-78)

हज़रत अबु सईद खुदरी (र.ज.) फरमाते हैं - "कि हम अनसार लोग, मुनाफिक़ीन को उनके हज़रत मौला अली (क.व.क.) के साथ बुग़ज़ की वजह से पहचानते थे।"

(तिरमिज़ी-फी-अल-जामेअ अस-सहीह, 05 / 635, हदीस रक़म-3717)

नोट - तो यहाँ से साफ ज़ाहिर है कि मौला अली (अ.स.) से मुहब्बत सिर्फ मोमिन ही करेगा, और सिर्फ मुनाफिक ही उनसे बुग्ज़ रखेगा।

और यह सहाबा-ए-किराम का तरीके-कार था कि मोमिन को मुहब्बत-ए-अली-ए-मुर्तज़ा से पहचानते थे, और मुनाफिक को बुग्ज़-ए-अली (र.ज.) से पहचानते थे।

यहाँ से वाज़ेह हो गया कि यह सहाबा-ए-किराम (र.ज.) की सुन्नत है कि - 'ज़िक्रे मौला अली करो और सामने वाले का चेहरा खिल उठे तो समझ लो मोमिन है और जिसका चेहरा ज़िक्रे मौला अली (अ.स.) से बिगड़ने लगे व सियाह पड़ जाए तो जान लो कि यह मुनाफिक है। हुज़ूर (अ.स.) ने हमको मोमिन और मुनाफिक में फर्क करने के लिए एक पैमाना दे दिया है, और वह है ज़िक्रे मौला अली (अ.स.)।

(सुह्नान-अल्लाह)

बाब

सहाबा-ए-किराम (र.ज.) का अद्व व ताज़ीम-ए-एहलेबैत (अलयहिमुस-सलाम)

- ख़लीफा-ए-बरहक यारे ग़रे नबी अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत अबू-बकर सिद्दीक (र.ज.) ने फरमाया -

“क़सम है उस ज़ात की जिसके कब्जे कुदरत में मेरी जान है,

नबी करीम ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ की

एहलेबैत (क़राबत) के साथ सुलूक करना मुझे अपनी क़राबत
के साथ सुलूक करने से ज्यादा अज़ीज़ है ”

(सही बुखारी शारीफ, जिल्द-2, सफा-615)

2. ख़लीफा-ए-बरहक अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत उमर-ए-फारुक (र.ज.) से रिवायत है कि उनके पास दो बदू झगड़ा करते हुए आए, तो हज़रत उमर-ए-फारुक (र.ज.) ने हज़रत मौला अली शेरे खुदा (क.व.क.) से फरमाया -

“ऐ अबुल-हसन (जनाबे अली (अ.स.)) इन दोनों के दरमियान फैसला फरमा दीजिए” बस मौला अली (र.ज.) ने उनके दरमियान फैसला कर दिया।

उनमें से एक ने कहा कि “क्या यही हमारे दरमियान फैसला करने के लिए रह गये हैं ?” इसी पर हज़रत उमर (र.ज.) (को जलाल आ गया) उसकी तरफ बढ़े और गिरेबान पकड़ कर फरमाया,

“तू हलाक हो ! क्या तू नहीं जानता कि यह कौन हैं ? यह मेरे (यानी उमर के) और हर मोमिन के मौला हैं, जो इनको मौला न माने वह मोमिन नहीं ।”

(मुहीबुद्दीन-तबरी-फी-अर-रियाज-उन-नज़रह
फी मनाकिब-इल-अशरह, 3 / 128)

- नोट - हज़रत उमर-ए-फारुक (र.ज.) ने बयाने सदाक़त के ज़रिए से फरमा दिया, कि जो (मौला अली के फज़ाइल-ओ-मनाकिब जानने के बाद) हज़रत अली इन्हे अबुतालिब (र.ज.) को अपना मौला (मालिक, आका) न माने वह मोमिन नहीं हो सकता ।

3. हज़रत अमीर बिन इशाक से रिवायत है कि हज़रत अबु-हुरैरा (र.ज.) हज़रत इमाम हसन (अ.स.) को मिले तो उनसे हज़रत अबु-हुरैरा (र.ज.) ने अर्ज़ किया -

“आप अपने पेट से कपड़ा उठाईच्ये ताकि मैं वहाँ बोसा दूँ, जहाँ मैंने रसूल-ए-करीम ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ को बोसा देते हुए देखा है, तो इमाम हसन (अ.स.) ने अपने पेट से कपड़ा उठा लिया तो हज़रत अबु-हुरैरा ने उनको नाँफ पर बोसा दिया ।”

(फज़ाईल-उस-सहाबा, सफा-458)

4. हज़रत अबु-हुरैरा (र.ज.) ने बयान किया कि ‘मैं एक दिन हुज़ूर ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ के साथ बनु-कीनकाअ के बाजार तक गया, वहाँ से जब वापिस हुआ तो हुज़ूर ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ हज़रत ख़ातूने जन्नत बीबी सथदा फातिमा ज़हरा (स.अ.) के घर तशरीफ ले गये, और फरमाया - कि जनाबे हसन कहाँ हैं ?

हज़रत अबु-हुरैरा कहते हैं कि मैं दरवाजे पर ही खड़ा रहा, कुछ वक्त गुज़रने के बाद वो बाहर दौड़ते हुए तशरीफ लाए और हुज़ूर (अ.स.) के सीन-ए-मुबारक से चिमट गये, और हुज़ूर (अ.स.) ने भी उन्हें गले लगा लिया, और हुज़ूर-ए-पाक ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ ने फरमाया -

“ऐ अल्लाह ! मैं इस बच्चे (इमाम हसन (अ.स.) को दिल-ओ-जान से महबूब रखता हूँ तू भी इसको महबूब रख और जो इसको महबूब रखे उसको भी महबूब रख ।”

हज़रत अबु-हुरैरा (र.ज.) (जलील-उल-कदर सहाबा में से हैं) कहते हैं कि “जिस दिन से मैंने हुज़ूर का यह इरशाद सुना है उस दिन से मुझे हज़रत इमाम हसन (र.ज.) तमाम लोगों से ज़्यादा महबूब और प्यारे हैं ।”

(सवाइक-अल-मुहर्रिका, सफा-136), (बारह इमाम, सफा-279, 280)

5. इमाम अहमद बिन हम्बल (र.ह.) ने अबु साबित से रिवायत की है कि “हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.) मस्जिद में तशरीफ लाए तो हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी (र.ज.) {बहुज ज़्यादा जलील-उल-कदर सहाबी हैं} ने फरमाया के जो पसन्द करे कि वह एहले जन्नत के सरदार को देखे वह हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.) को देखे, यह मैंने नबी करीम ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ से सुना है ।”

(अल बिदाया वन-निहाया, जिल्द-8, सफा-206)

6. हज़रत सालिम से रिवायत है कि अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत उमर-ए-फारुक (र.ज.) से सवाल किया गया कि “क्या वजह है कि आप हज़रत अली इब्ने अबु

तालिब (र.ज.) के साथ ऐसा (इमतियाजी) बरताओ करते हैं, जो आप दीगर सहाबा-ए-किराम (र.ज.) के साथ (उमूमन) नहीं करते ?”

इस पर हज़रत उमर-बिन-ख़ुत्ताब (र.ज.) ने फरमाया -

“वह ‘अली’ तो मेरे ‘मौला’ है”

(मुहीबुद्दीन अहमद तबरी-फी-अर-रियाजुन-नज़रह-फी-
मनाकिब-इल-अश्राह, 03 / 128)

(इन्हे असाकिर-फी-तारीखे दमिश्ख-अल-कबीर, 45 / 178)

नोट - सहाबा-ए-किराम (र.ज.) हुजूर ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ के फैज़ से मुनव्वर हैं, उनको मुहब्बत-ए-एहलेबैत व ख़िदमते एहलेबैत व ताज़ीम-ए-एहलेबैत यह सब हुजूर (अ.स.) ने उनको सिखाई थी, इसलिए सहाबा-ए-किराम (र.ज.) दिलो-ओ-जान से एहलेबैत से मुहब्बत करते थे, तो हमारे लिए एहलेबैत की मुहब्बत व उनकी ख़िदमत हर हाल में लाजिम है, और यही ‘अजरे रिसालत’ है, और मुकद्दस सहाबा-ए-किराम (र.ज.) की सुन्नत भी है।

7. हज़रत उमर बिन ख़ुत्ताब (र.ज.) से मरवी है कि “आप ने फरमाया ‘अली’ हम में ज़्यादा सही फैसला करने वाले हैं।”

(रियाजुन-नज़रह-फी-मनाकिब-इल-अश्राह, सफा-133)

8. हज़रत सईद बिन मुसय्यब (र.ज.) बयान करते हैं कि - हज़रत उमर-ए-फारुक (र.ज.) हर ऐसे पेचीदा मसअले से अल्लाह की पनाह मँगते थे, जिसके हल करने के लिए हज़रत अली (र.ज.) मौजूद न हो।

- हज़रत उमर बिन ख़ुत्ताब (र.ज.) खुद फरमाते हैं - “कि मैं खुदा की पनाह चाहता हूँ कि मैं उस कौम में ज़िन्दा रहूँ, ‘ऐ अबुल-हसन’ जिसमें आप मौजूद न हों।”

(रियाजुन-नज़रह-फी-मनाकिब-इल-अश्राह, सफा-120, 121)

9. हज़रत अनस बिन मालिक (र.ज.) कहते हैं कि ‘मुझे एहलेबैत में सब से ज्यादा महबूब हसनैन-करीमैन (अ.म.स.) हैं।’

(एहसनुल-इन्तिख़ाब-फी-मईशते-अबु-तुराब, सफा-173)

10. हज़रत उमर-ए-फारूक (र.ज.) फरमाते हैं कि हुज़ूर-ए-पाक ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ ने इरशाद फरमाया -

“हज़रत अली इन्हे अबु तालिब (र.ज.) की मुहब्बत आग से आज़ादी की सनद है।”

(दैलमी-फी-अल-फिरदौस, 03 / 142, रक़म-2723)

11. सच्चा वाक़्या है, हज़रत उमर (र.ज.) की दौर-ए-ख़िलाफत-ए-राशिदा का - ‘एक औरत ने ‘6’ माह का बच्चा जना, तो हज़रत उमर (र.ज.) ने उसे संगसार करना चाहा, तो हज़रत मौला अली (क.व.क.) ने हज़रत उमर से फरमाया - “अल्लाह फरमाता है कि बच्चे के हमल और दूध पीने की मुद्दत ‘30’ माह है, दूध के बारे में कहा है कि उसकी मुद्दत ‘2’ साल है, लिहाज़ा हमल की मुद्दत ‘6’ माह और दूध पीने की उम्र 2 साल हुई। हज़रत उमर (र.ज.) ने औरत को रजम न किया और कहा - “अगर अली न होते तो उमर हलाक़ हो जाता।”

(रियाजुन-नज़रह-फी-मनाकिब-इल-अशराह, सफा-120)

“खुदाया ब-हक़के बनी फातिमा,
के बर कौल-ए-ईमाम कुनी ख़ात्मा।”

आले रसूल (सच्चद-ज़ादों) की ताज़ीम

चूंकि सादात-ए-किराम का नसब रसूल-अल्लाह 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' का नसब है, और सादात-ए-किराम हुजूर-ए-पाक (अ.स.) की औलाद हैं, लिहाज़ा सादात-ए-किराम की इज़्जत-ओ-अज़मत व उनसे मुहब्बत हर हाल में लाज़िम है।

'अल्लामा इन्हे हजर मक्की (र.ह.) ने लिखा है कि - ईराक का एक अमीर, सादात-ए-किराम से बहुत मुहब्बत रखता था और उनकी इन्तेहाई ताज़ीम करता, उसकी मजलिस में जब कोई सच्चद मौजूद होता तो उनको सब से आगे बैठाता, एक मर्तबा एक सच्चद उस अमीर की मजलिस में आऐ, उस वक्त वहाँ एक बहुत बड़ा आलिम मौजूद था, सच्चद साहब को बैठने के लिए जो जगह मिली वह उस आलिम की जगह से ऊँची थी, वह उस जगह बैठ गये और वह उसके मुस्तहिक भी थे, और जानते थे कि अमीर उससे ही राज़ी होगा, मगर उस आलिम के चेहरे पर नागवारी के आसार ज़ाहिर हुए, और उस आलिम ने नामुनासिब गुफ्तगू शुरू कर दी, अमीर ने उस बात पर तवज्जो न दी और दूसरी बात शुरू कर दी, कुछ देर बाद जब यह मामला भूल गया, तो अमीर ने उस आलिम के बेटे के मुतालिक दरयापत किया, जो तहसीले इल्म में मसरूफ था, उस आलिम ने कहा वह सबक याद करता है, बस अमीर ने उस आलिम से कहा - क्या तूने उसके लिए ऐसा नसब भी मुहय्या किया है और ऐसी शराफ़त भी सिखाई है कि वह नबी करीम 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' की औलाद में से हो जाए, आलिम अपनी हरकत फरामोश कर चुका था, उसने कहा यह फ़ज़ीलत फराहम करने और सिखाने से हासिल नहीं हो सकती, यह तो अल्लाह की इनायत है, उसमें कसब को दख़ल नहीं है, बस अमीर ने बड़े ज़ोर से कहा - 'ख़बीस' जब तुझे यह बात मालूम है, तो तूने सच्चद साहब के ऊँची जगह बैठने को क्यों नागवार महसूस

किया, ब-ख़द्दुआ आएंदा तुम मेरी मजलिस में नहीं आओगे, फिर हुक्म दिया और उसे वहाँ से निकलवा दिया।'

(बरकात-ए-आले रसूल, सफा-269)

नोट - अब इससे साफ ज़ाहिर हुआ कि जो आदमी रसूल-ए-पाक (अ.स.) की औलाद सादात-ए-किराम की इज़्जत करने में आर व नागवारी महसूस करता हो वह 'ख़बीस' है, और इस वाक्य से यह भी ज़ाहिर हुआ कि शख्स अपने इल्म व फज़ल और तक्या के लिहाज़ से सादात (यानी सच्चद ज़ादों) के मर्तबे तक नहीं पहुँच सकता।

हुज़ूर-ए-पाक 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' की औलाद से होना यह फज़ीलत उनके साथ ही ख़ास है।

नोट - फाज़िल-ए-बरेलवी मौलाना अहमद रज़ा ख़ान साहब फरमाते हैं -

'एहलेबैत-ए-पाक की मुहब्बत मुसलमानों का ढीन है,
और इससे महसूम नासबी, ख़ारजी, जहन्जमी हैं।'

(फतावा रिज़विया, जिल्द-22, सफा-421)

"तेरी नस्ले पाक में है बच्चा-बच्चा नूर का,

तू है आइना-ए-नूर तेरा सब घराना नूर का।"

(फाज़िल-ए-बरेलवी मौलाना अहमद रज़ा ख़ान साहब)

आइम्माए-एहलेबैत-ए-अतहर (अ.म.स.) के नाम-ए-मुबारक में शिफा

जिस तरह हुजूर 'सल्लाहो-अलैहै-वा-आलिही-वसल्लम' के नाम-ए-मुबारक में और उनकी ज़ात-ए-पाक में मोअज़ेज़ात हैं, उसी तरह आपके खानदानी निर्बत की वजह से एहलेबैत-ए-अतहर (अ.स.) के नाम-ए-मुबारक और ज़ात-ए-पाक में भी अल्लाह ने करामतें वटीअ़त फरमाई है। और उन आइम्माए-एहलेबैत-ए-अतहर की कुल ताअ़दाद '12' है और यह सब हुजूर (अ.स.) की पाक आल से हैं; और यह वाज़ेह रहे कि यह आइम्माए-एहलेबैत किसी एक फिरका-ए-मख्सूस के नहीं है, बल्कि पूरी उम्मत के लिए राहे हिदायत है और इनसे मुहब्बत करना 'अजरे रिसालत' है।

जिस तरह खुलफा-ए-राशिदीन व खुलफा-ए-बरहक की कुल ताअ़दाद पाँच '5' है, (1) हज़रत अबु-बक्र सिद्दीक (र.ज.), (2) हज़रत उमर-ए-फारूक (र.ज.), (3) हज़रत उस्मान-ए-ग़नी (र.ज.), (4) हज़रत इमाम मौला अली शेरे खुदा (क.व.क.), (5) हज़रत इमाम हसन (अ.स.)।

उसी तरह आइम्माए-एहलेबैत-ए-अतहर की कुल ताअ़दाद '12' है, और इन्हीं से हुजूर (अ.स.) का फैज़-ए-विलायत आज भी औलिया-अल्लाह के सलासिले-तरीक़त में जारी-ओ-सारी है। और इन आइम्माए-एहलेबैत के इमामों में से बारहवें इमाम - इमाम-ए-ज़माना हुजूर इमाम आली मकाम ख़लीफ़तुल्लाह हज़रत इमाम मेंहदी (अ.स.) कयामत से पहले तशरीफ लायेंगे (जिनके ज़ुहूर के बारे में कई सहीह हदीस एहले-सुन्नत की कुतुब में भी रिवायत है)। उन पाक आइम्माए-एहलेबैत-ए-अतहर के असमा-ए-मुबारक -

(1) हज़रत इमाम मौला अली (अ.स.), (2) हज़रत इमाम हसन (अ.स.), (3) हज़रत

इमाम हुसैन (अ.स.), (4) हज़रत इमाम अल मारुफ इमाम जैनुल आबिदीन अली इब्ने हुसैन (अ.स.), (5) हज़रत इमाम मुहम्मद बाकर (अ.स.), (6) हज़रत इमाम जाफर-ए-सादिक (अ.स.), (7) हज़रत इमाम मूसा काज़िम (अ.स.), (8) हज़रत इमाम अली रज़ा (अ.स.), (9) हज़रत इमाम मुहम्मद तकी (अ.स.), (10) हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.), (11) हज़रत इमाम हसन असकरी (अ.स.), (12) हज़रत इमाम मुहम्मद महदी (अ.स.)।

‘चन्द हदीसें कुतुब-ए-हदीस में ऐसी भी हैं जिसको मुहदिसीन-ए-किराम ने बहुत ही अदब के साथ अपनी-अपनी कुतुब में रिवायत किया और वह हदीस इन्हीं आइम्मा-ए-एहलेबैत से रिवायत है, तो इस हदीस को मुहदिसीन ने सिलसिलत-उज़्ज़-जहब (The Golden Chain of Narration) का नाम दिया है, उनमें से एक हदीस यह है -

“मनकौल है कि जब हज़रत अली रज़ा (अ.स.) नीशापुर तशरीफ लाए, तो उस वक्त वहाँ के अकाबिर मुहदिसीन और तलबा के साथ हज़रत इमाम की ज़ियारत को तशरीफ लाए, और अर्जु गुज़ार हुए ; कि या हज़रत इमाम ! एक हदीस अपने आबा-ए-किराम की सनद से बयान फरमा दें - तो कमाल बन्दा नवाज़ी हो ।”

“तो हज़रत इमाम अली रज़ा (अ.स.) ने एक हदीस बयान की - कि मुझसे मेरे वालिद ‘हज़रत इमाम मूसा काज़िम’ ने उनसे उनके वालिद ‘हज़रत इमाम जाफर सादिक’ ने उनसे उनके वालिद ‘हज़रत इमाम बाकर’ ने उनसे उनके वालिद ‘हज़रत इमाम जैन-उल-आबिदीन’ ने उनसे उनके वालिद ‘हज़रत इमाम हुसैन’ ने उनसे उनके वालिद ‘हज़रत अमीर-उल-मोमिनीन अली-ए-मुर्तज़ा’ ने बयान किया, हज़रत अली (अ.स.) फरमाते हैं - मुझसे मेरे हबीब और मेरी आँखों की ठंडक हुज़ूर ‘सल्लाहो-अलैहै-वा-आलिही-वसल्लम’ ने बयान किया और उनसे हज़रत जिबराइल (अ.स.) ने कहा, कि मुझसे जनाब-ए-बारी तआला ने फरमाया - ‘بِلَّا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ’ (यानी कलिमा) मेरा किला है, जिसने यह कहा वह मेरे किले में दाखिल हुआ, और जो मेरे किले में दाखिल हो गया, वह मेरे अज़ाब से बेखौफ हो गया ।”

जब हज़रत इमाम अली रज़ा (अ.स.) यह हदीस बयान कर चुके तो सबने फौरन लिख ली, लिखने वाले तक़रीबन ‘20’ हजार थे ।

‘हज़रत-ए-इमामे मुजतहिद सय्यदना अहमद बिन हम्बल (र.ह.) इस हदीस (सिलसिलतुज़-ज़हब) का ज़िक्र करते तो फरमाते -

“कि अगर यह मजनून (पागल, दीवाना) पर पढ़ी जाए तो उसको शिफ़ा मिल जाए, अगर बीमार पर पढ़ी जाए तो वह अच्छा हो जाए, कब्र में लिख कर दी जाए तो आज़ाबे-कब्र उठा लिया जाए ।”

हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल (र.ह.) का यह मामूल था कि जब उनके पास कोई ‘सय्यद’ आते तो वह उसकी ताज़ीम करते, उसको सामने बैठाते और खुद पीछे बैठते ।

(मुस्नद अहमद बिन हम्बल)

(एहसनुल-इन्तिखाब-फी-मईशते-अब-तुराब, सफा-177, 178)

नोट - यह इमाम-ए-मुजतहिद हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल (र.ह.) अपनी सनद से यह बयान कर रहे हैं कि, जो इस हदीस (सिलसिलत-उज़-ज़हब) की सनद जिसमें आइम्मा-ए-किराम-ए-एहलेबैत के इस्म-ए-पाक मुबारक हैं, यह किसी पागल पर या किसी बीमार पर पढ़ी जाए (दम की जाए) तो उसको शिफ़ा हासिल हो जाए । तो जब हज़रात-ए-आइम्मा-ए-एहलेबैत के नाम-ए-मुबारक में यह शिफ़ा है कि बीमार अच्छा हो जाए, तो उनकी ज़ात-ए-पाक का आलम क्या होगा ।

(अल्लाहु-अकबर)

बाब

एहलेबैत की मुहब्बत में मरना शहादत है

“हुजूर नबी करीम ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ ने फरमाया - “जो एहलेबैत की मुहब्बत पर फौत (मरा) हुआ, उसने शहादत की मौत पाई ।”

(तफसीर-ए-कबीर, जिल्द-7, सफा-390)

निजात-ए-मुहिब्बाने एहलेबैत

अल्लामा इब्ने हजर मक्की (र.ह.) अपनी किताब 'सवाइक-अल-मुहर्रिका' में लिखते हैं, कि रसूल-अल्लाह 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' सहाबा-ए-किराम की जानिब तशरीफ लाए और आपका चेहरा मुबारक इस तरह रौशन था, जैसे चाँद का दायराह होता है, बस हज़रत अब्दुर्र-रहमान (र.ज.) ने उस खुशी का सबब पूछा तो हुङ्गुर (अ.स.) ने फरमाया - "कि मुझे मेरे रब की तरफ से जनाब-ए-अली (र.ज.) और मेरी बेटी सय्यदा-ए-कायनात हज़रत फातिमा ज़हरा (स.अ.) के बारे में बाशारत मिली है कि अल्लाह ने अली का निकाह फातिमा से कर दिया है, और रिज़वान-ए-खाजिने जन्नत को हुक्म फरमाया है कि वह तूबा के दरख़त को हिलाएँ और उससे गिरने वाले औराक़ (पत्ते) 'मुहिब्बाने-एहलेबैत' की ताअ़दाद के मुताबिक उठा लें और फिर तूबा के नीचे नूर से फरिश्ते पैदा किये और वह औराक़ (पत्ते) उन फरिश्तों को दिये, बस जब क़्यामत क़ायम होगी तो फरिश्ते मख़लूकात में निदा करेंगे और 'मुहिब्बान-ए-एहलेबैत' में से कोई शख्स बाकी न रहेगा जिसे वह वरक़ न दिया जाए, और 'उस वरक़ (दस्तावेज़) पर जहन्नम (दोज़ख़) से रिहाई के बारे में लिखा होगा।'

"बस मेरा भाई और चचा का बेटा और मेरी बेटी मेरी उम्मत के मर्दों और औरतों की आग से गरदने छुड़ाने वाले बन जाएंगे।" (सुब्हान-अल्लाह)

(सवाइक-अल-मुहर्रिका, सफा-581)

आइम्मा-ए-मुजतहिदीन व बुजुर्गन-ए- दीन (औलिया अल्लाह) के अक़वाल एहलेबैत-ए-अतहर की शान में

- सरकार इमाम-ए-मुजतहिद हज़रत इमाम-ए-आज़म अबु हनीफा (र.ह.) की मुहब्बत व अदब-ए-एहलेबैत -

हज़रत इमाम-ए-आज़म अबु हनीफा (र.ह.) एहलेबैत से बहुत मुहब्बत व ताज़ीम का मामला फरमाते थे, और उनकी ज़ाहिर व पोशिदा तौर पे ख़ूब खिदमत करते थे (जानी व माली खिदमत) और उनकी कुरबत हासिल करते थे, और अपने शागिर्दों को भी एहलेबैत की मुहब्बत व ताज़ीम का दर्स दिया करते थे।

हज़रत इमाम अबु हनीफा (र.ह.) फरमाते हैं, “क़ौम-ए-यहूद की दोस्ती हज़रत मूसा (अ.स.) की औलाद से ज़ाहिर है, और उनके भाई हारून की औलाद के साथ भी मुहब्बत मालूम है, इस तरह नसारा हज़रत ईसा (अ.स.) की मुहब्बत को बुजुर्ग जानते हैं, तो मुसलमान हुजूर ‘सल्लाहो-अलैहै-वा-आलिही-वसल्लम’ की औलाद को कैसे न दोस्त रखेगा ख़्वाह उस मुहब्बत में वह क़त्ल किया जाए या बेदीन बताया जाए, लोगों ने हुजूर (अ.स.) के हक़ को उनके एहलेबैत में ख़्याल न किया अल्लाह उसका बदला लेगा।”

हज़रत इमाम अबु हनीफा (र.ह.) को जो फैज़ और इल्म और तरीका हज़रात-ए-आइम्मा-ए-एहलेबैत (हज़रत इमाम बाकर (अ.स.), हज़रत इमाम जाफ़र सादिक (अ.स.) व हज़रत इमाम ज़ैद शहीद (अ.स.)) से हासिल हुआ वह मोहताज-ए-बयान नहीं।

(एहसान-उल-इन्तिख़ाब-फी-मईशते अबु-तुराब, सफा-175)

हज़रत इमाम अबु हनीफा (र.ह.), हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) की ख़िदमत में बहुत रहे, और बहुत ही जलील-ओ-क़दर ताबई व मुक्तदाए ख़ल्क़ हुए।

नोट - सरकार इमाम-ए-मुजतहिद इमाम-ए-आज़म हज़रत अबु-हनीफा (र.ह.) बहुत बड़े फ़िक़हा के इमाम-ए-एहलेसुन्नत हैं, आपसे फ़िक़हा-ए-हनफी वजूद में आया, यह एक ऐसा फ़िक़हा है जिसके मुकल्लिद बड़े-बड़े उलेमा-ए-हक़ और औलिया-अल्लाह हैं। यह मुकाम इमाम अबु हनीफा को ख़िदमत-ए-एहलेबैत से अता हुआ।

खुद इमाम-ए-आज़म अबु-हनीफा (र.ह.) इरशाद फरमाते हैं -

“अगर मैं दो साल हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) (जो आइम्मा-ए-एहलेबैत के छठे (6th) इमाम हैं) की ख़िदमत में न बैठता तो मैं (यानी नौमान बिन साबित इमाम अबु हनीफा) हलाक़ हो गया होता।”

(अद-दुर्र-अल-मुख्तार, जिल्द-1, सफा-43)

नोट - तो इस कौल से हज़रत इमाम अबु हनीफा (र.ह.) की मुहब्बत की शिद्दत पता चलती है और वह शुक्र बजा ला रहे हैं, ‘कि मैं अगर दो साल इमाफ़र सादिक़ (अ.स.) की ख़िदमत में न बैठता तो मैं हलाक़ व बर्बाद हो गया होता।’

तो इससे इमाम अबु हनीफा की हुज़ूर इमाम आली मकाम हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) से गहरी निस्बत-ओ-ताल्लुक़ का पता चलता है और साथ-साथ अकीदते एहलेबैत का दर्स भी मिलता है।

‘हमें नाज़ है कि हम सरकार इमामे मुजतहिद हज़रत इमाम अबु-हनीफा के मुकल्लिद हैं, जो कि बराहे रास्त शागिर्द व गुलाम है एहलेबैत के’

नोट - तो पता चला यह आइम्मा-ए-एहलेबैत वह है, जो इनकी बारगाह-ए-अक्दस से फैज़ हासिल करता है, उन्हें ज़माना इमाम-ए-आज़म कहता है।

2. सरकार इमाम-ए-मुजतहिद हज़रत इमाम मालिक़ (र.ह.) की मुहब्बत-ओ-ताज़ीमे एहलेबैत - सरकार इमाम-ए-मुजतहिद हज़रत इमाम मालिक़ (र.ह.),

हुँजूर इमाम-ए-आली-मकाम हज़रत इमाम जाफ़र सादिक (अ.स.) (जो कि आइम्मा-ए-एहलेबैत के छठे (6th) इमाम हैं) के याराने ख़्वास और बेहतरीन शागिर्दों और मुहिब्बीन में से हैं।

हज़रत इमाम मालिक (र.ह.) को जाफ़र बिन सुलैमान ने मारा और इतनी तक़लीफ दी के बेहोश हो गये, तो लोग उनकी अयादत को आये, जब उनको इफ़ाक़ा हुआ तो लोगों से मुख्यातिब होकर कहने लगे, “मैं गवाह करके कहता हूँ कि मैंने मारने वाले का क़सूर माफ़ किया, लोगों ने वजह पूछी तो फरमाया - कि मुझे खौफ़ मालूम होता है कि मर जाऊँ और हुँजूर (अ.स.) से मुलाकात हो और मेरी वजह से उनके चचा की आल (नोट-जाफ़र बिन सुलैमान अब्बासी हाकिम था) दोज़ख में जाए, लिहाज़ा माफ़ किया।”

(एहसनुल-इन्तिख़ाब-फी-मईशते-अबु-तुराब, सफा-175)

नोट - इमाम मालिक (र.ह.) एहलेबैत से मुहब्बत करते थे और बहुत ज्यादा अदब करते थे, इसलिए आपकी भी मुख्यालिफ़त हुई, जो अब्बासी हुक्मरान थे वह एहलेबैत से बुग़ज़ रखते थे, तो वह उसको सज़ा देते थे जो एहलेबैत से मुहब्बत रखता था।

हज़रत इमाम मालिक (र.ह.) फिक़हा-ए-मालिकी के इमाम हैं। हज़रत इमाम मालिक (र.ह.) फरमाते हैं कि -

“मैं जनाब-ए-फातिमा ज़हरा (स.अ.) पर किसी को भी फज़ीलत नहीं दे सकता ख़्वाह कोई भी हो।”

(हावि-उल-फतावा-अस-सियूती, जिल्द-2, सफा-909)

3. सरकार इमाम-ए-मुजतहिद हज़रत इमाम शाफ़ई (र.ह.) की मुहब्बत-ओ-ताज़ीम-ए-एहलेबैत - सरकार-ए-इमाम-ए-मुजतहिद हज़रत इमाम शाफ़ई (र.ह.) बहुत बड़े आशिके एहलेबैत हैं, और आपकी इसी शिद्दते मुहब्बत-ए-एहलेबैत से नासबी और खारजियों को चिड़ हुई तो सबने इमाम शाफ़ई (र.ह.) को राफ़ज़ी कहा।

तो जब यह इमाम शाफ़ई (र.ह.) को पता चला तो इमाम शाफ़ई (र.ह.) ने फरमाया -

“अगर आले-मुहम्मद ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ की मुहब्बत तुम्हारे नज़्दीक रिफ़ज़ (राफ़ज़ियत) है तो जिन्हें व इन्स गवाह हो जाएं मैं सबसे बड़ा राफ़ज़ी हूँ।” फिर फरमाया -

“ऐ आले मुहम्मद ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ आपकी मुहब्बत अल्लाह तआला की नाज़िल करदा कुरआन के मुताबिक़ फर्ज है। आपकी अज़मत के लिए यह बात काफी है कि जो शख़्स आप पर दुरुद शरीफ न भेजे उसकी कोई नमाज़ नहीं होती।”

(दीवान-ए-इमाम शाफ़ई (र.ह.), सफा-343)

नोट - सरकार इमाम-ए-मुजतहिद हज़रत इमाम शाफ़ई (र.ह.) बहुत बड़े आशिके एहलेबैत हैं, और उनकी शिद्दते-मुहब्बत-ए-एहलेबैत उनके अपने कौल से साफ़ जाहिर है। हज़रत इमाम शाफ़ई (र.ह.) एहलेसुन्नत के शाफ़ई फिक़हा के इमाम हैं।

4. सरकार इमाम-ए-मुजतहिद हज़रत इमाम अहमद-बिन-हम्बल (र.ह.) की मुहब्बत-ओ-ताज़ीम-ए-एहलेबैत - हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल (र.ह.) हमेशा एहलेबैत-ए-अतहर (अ.स.) की ताज़ीम व तक़रीम करते थे, जब कोई औलाद-ए-रसूल (एहलेबैत) से उनके पास आता तो अपनी जगह से उठ जाते और उन्हें मुकद्दम् फरमाया करते थे और खुद उन की ताज़ीम में उनके पीछे बैठते थे।

(तारीख़े करबला, सफा-73)

हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल (र.ह.) फरमाते हैं -

“बेशक खिलाफ़त ने अली को ज़ीनत नहीं बख़्शी बल्कि जनाबे अली (अ.स.) ने खिलाफ़त को ज़ीनत बख़्शी।” और फरमाते - “हज़रत मौला अली (र.ज.) एहलेबैत में से हैं, उन पर किसी को क्यास नहीं किया जा सकता।” और फरमाते - “किसी भी सहाबी के बारे में सही असानीद के साथ इतने फजाइल मनक़ूल नहीं, जितने कि हज़रत मौला अली शेरे खुदा (क.व.क.) के बारे में है।

(मनाकिब-इन्ने हम्बल, सफा-119)

नोट - हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल (र.ह.) फिक़हा-ए-हम्बली के इमाम हैं।

- 5.** हुज़ूर मेहबूब-ए-सुङ्खानी कुतुब-ए-रब्बानी हज़रत सय्यद इमाम अब्दुल कादिर जीलानी (हुज़ूर गौस पाक) (र.ह.) की मुहब्बत-एहलेबैत - हज़रत सय्यद अब्दुल-कादिर जीलानी हुज़ूर गौस पाक (र.ह.) इरशाद फरमाते हैं -

‘दिलम जे इश्के मोहम्मद परस्त व आले नबी,
गवाह हालेमन अस्त ई हमां हिकायातम्’

‘मतलब ये के मेरा दिल मोहम्मद-ओ-आले मोहम्मद (स.अ.वा.व.) के इश्क से पुर है और उसकी गवाह मेरी हालत है।’

‘किफायत अस्त जे रुहे रसूल औलादश,
हमेशा विरदे ज़बाँ जुम्लाए मुहिम्मातम्’

‘यानि मैं हर परेशानी में आले रसूल के नाम का विर्द करता हूँ, और उनका ही नाम मेरी हर परेशानी दूर करता है, और मुझे उनके नाम का सहारा काफ़ी है।’

‘जे गैरे आले नबी हाजते अगर तलबम्,
रवा मदार यके अज़ हज़ार हाजातम्’

‘यानि मुझे चाहे हज़ार हाजत हो चाहे कितनी भी परेशानी हो मगर आले नबी के अलावा किसी और वसीले से मेरी परेशानी दूर हो मैं उसको जायज़ नहीं रखता।’

(फज़ाईल-ए-एहलेबैत सवाल व जवाब, मुसन्निफ-मुहम्मद क़ासिम नियाज़ी साहब)

नोट - सरकार हुज़ूर गौस-ए-आज़म हज़रत सय्यद अब्दुल कादिर जीलानी (र.ह.) नसब से खुद हसनी व हुसैनी सय्यद हैं व नजीबुत्तरा-फैन (उन सय्यद ज़ादों को कहते हैं जो वालिद-वालिदह दोनों जानिब से हसनी, हुसैनी सय्यद आली नसब होता है) सय्यद हैं।

(सुङ्खान-अल्लाह)

सरकार हुजूर गौस पाक (र.ह.) वह वली-ए-कामिल हैं जो औलिया-अल्लाह के सरदार हैं, और मर्तबा-ए-गौसियत पे फ़ायज़ हैं, सरकार गौस पाक का मुबारक क़दम सारे औलिया की गरदनों पर है, खुद सरकार गौस-ए-आज़म ने फरमाया - “मेरा यह कदम सारे वलियों की गरदनों पर है ।”

जिनकी लोग अकीदत से ग्यारहवीं शरीफ की नियाज़ दिलाते हैं, वह गौस-ए-आज़म लाडले हैं पंजतन पाक के । तो किस क़दर हुजूर गौस-ए-पाक को एहलेबैत (आले नबी) से इश्क़ है, यह तो उनके क़लाम से जाहिर है, बेशक उनका कदम सारे वलियों की गरदनों पर है और उनके ऊपर पंजतन पाक के कदम-ए-फैज़ है, उनको यह मर्तबा-ए-विलायत हज़रत मौला अली मुश्किल कुशा शेरे खुदा (क.व.क.) से अता हुआ । आप सलासिले तरीक़त सिलसिलाए-कादरिया के बानी व पेशवा हैं ।

“दादा हसन (अ.स.) तुम्हारे, नाना हुसैन (अ.स.) तुम्हारे,
बड़े घराने वाले पीर, बड़े पीर दस्तगीर ॥”

6. सरकार हुजूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ हिन्द-अल-वली हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन चिश्ती (र.ह.) की मुहब्बत-एहलेबैत - हुजूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ (र.ह.) फरमाते हैं -

“‘शाह अस्त हुसैन (अ.स.), बादशाह अस्त हुसैन (अ.स.)’”
‘शाह भी हुसैन है, बादशाह भी हुसैन है’

“‘दीन अस्त हुसैन (अ.स.), दीन पनाह अस्त हुसैन (अ.स.)’”
‘दीन भी हुसैन (अ.स.) हैं, दीन को पनाह देने वाले भी हुसैन (अ.स.) हैं’

“‘सरदाद न दाद दस्त दर दस्ते यज़ीद’”

‘सर दे दिया मग़र नहीं दिया अपना हाथ यज़ीद के हाथ में’

“‘हक़क़ा के बिना-ए-लाईलाहा-अस्त हुसैन (अ.स.)’”
‘हक़ीक़त तो यह है कि लाईलाहा-इल्लाह (कलिमा-ए-तौहीद) की बुनियाद ही हुसैन (अ.स.) हैं’

नोट - सरकार हुँजूर ख्वाजा ग्रीब नवाज़ (र.ह.), इमाम आली मकाम हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.) की औलाद में से हैं यानी सच्चयद हैं (सुब्हान-अल्लाह), हुँजूर ख्वाजा ग्रीब नवाज़ हिन्द के बली और सुल्तान हैं, आप ने हिन्दुस्तान में आकर इस्लाम को फरोग दिया और तारीखों में दर्ज है कि आपने 90 लाख इन्सानों को अपने नबी व अपने नाना जान का कलिमा पढ़वाकर मुसलमान बनाया। आपके दस्ते-हक परस्त पे लाखों-करोड़ों लोगों ने बैअृत की और सलासिले तरीकृत के सिलसिला-ए-चिश्तिया में दाखिल हुए। और सिर्फ इन्सानों पर ही आपका फैज़ान नहीं है, बल्कि मख़्तूक-ए-खुदा आपसे फैज़याब हैं।

आपकी मुहब्बत-ओ-इश्क-ए-एहलेबैत आपके कलाम से ज़ाहिर है। हुँजूर ख्वाजा ग्रीब नवाज़ (र.ह.) ने वाकिफ़-ए-क़रबला को अपनी इस रुबाई के ज़रिये बताया कि हक व बातिल की पहचान का मीआर एहलेबैत है।

7. हज़रत मुज़दिद अलफ़िसानी शैख़ अहमद सरहिंदी (र.ह.) की तेहकीक -
हज़रत मुज़दिद साहब (र.ह.) फरमाते हैं -

“और एक राह है जो कुरबे विलायत से ताल्लुक रखती है, अक़ताब, औताद और नुजाबा और आम औलिया-अल्लाह इसी राह से वासिल हैं, और राहे सुलूक इसी राह से इबारत है, बल्कि मुताअरिक ज़ज़ाबा भी इसी में दाखिल है, और इस राह तौसत (सिफारिश) साबित है और इस ‘राह के वासिलीन के पेशवा और उनके सरदार और उनके बुजुर्गों के मम्बा-ए-फैज़ हज़रत मौला अली शेरे खुदा (क.व. क.) हैं, और यह अज़ीम-उश-शान मनसब उनसे ताल्लुक रखता है, इस राह में गोया ‘रसूल-अल्लाह ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ के कदम-ए-मुबारक हज़रत मौला अली (र.ज.) के मुबारक सर पर है, और हज़रत ख़ातूने जन्नत फातिमा ज़हरा (स.अ.), हज़राते हसनैन करीमैन (अ.स.) उनके साथ इस मकाम में शरीक हैं।”

“मैं समझता हूँ कि हज़रत अमीर-उल-मोमिनीन मौला अली मुश्किल कुशा शेरे खुदा अबु तुराब (अ.स.) अपनी जसदी पैदाईश (यानि इस दुनिया में अपनी

नूरानियत के साथ लिबास-ए-बशर में आने से भी पहले) से पहले भी इस मकाम में मलजा-ओ-मावा थे (यानि पिछली उम्मतों में मौला अली ने ही वली बनाये), जैसा कि आप जसदी पैदाईश के बाद हैं, और जिसे भी फैज़-ओ-हिदायत इस राह से पहुँची, हज़रत मौला अली (अ.स.) के ज़रिये से पहुँची, क्योंकि वह राह के आखिरी नुक़ते के नज़्दीक हैं, और इस मकाम का मरकज़ हज़रत मौला अली (अ.स.) से ही ताल्लुक रखता है, और जब हज़रत अमीर-उल-मोमिनीन मौला अली (अ.स.) का (ज़ाहिरी) दौर ख़त्म हुआ तो यह अज़ीम-उल-क़दर मनसब तरतीब-वार हज़रत इमाम हसन (अ.स.), हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.) को सुपुर्द हुआ और इनके (ज़ाहिरी) दौर के बाद, वही मनसब आइम्मा-ए-असना-अश्रा (यानि आइम्मा-ए-एहलेबैल-ए-अतहर जो के 12 हैं) में हर एक को तरतीब-वार और तफसील से तफवीज (सुपुर्द) हुआ।” और इन बुजुर्गों के ज़माने में और इसी तरह इनके परदा फ़रमा जाने के बाद जिस किसी को भी फैज़-ओ-हिदायत पहुँची है, इन्हीं बुजुर्गों के ज़रिये से पहुँची है।

“अगर चे अक़ताब-ओ-नुजाबा-ए-वक़त ही क्यूँ न हो और सबके मावा-ओ-मलजा (पेशवा) यही बुजुर्ग (यानि एहलेबैत-ए-अतहर) हैं, अतराफ़ को अपने मरकज़ के सात इल्हाक़ किए बगैर चारा नहीं।”

(मक़तूबात-ए-मुज़दिद अलफ़िसानी, जिल्द-3, सफा-123)

8. हज़रत शाह अब्दुल हक़ मुहम्मद देहल्वी (र.ह.) की मुहब्बते एहलेबैत - सरताजुल मुहम्मदीन रईस-उल-मुहम्मदिक़ीन हज़रत शाह अब्दुल हक़ मुहम्मद देहल्वी (र.ह.) की एक इबारत मुलाहिज़ा फ़रमाए जिसमें आप ने मुकम्मल तौर पर वज़ाहत फ़रमा रखी है कि - “हज़रत मौला अली (अ.स.) का इल्म तमाम तर सहाबा-ए-किराम से वसीअ़ तर और अज़ीमतरीन है।” हज़रत शाह अब्दुल हक़ मुहम्मद देहल्वी (र.ह.), हदीस-ए-पाक ‘**اندَارُ الْحِكْمَةِ وَعَلَى بَابِها**

“हज़रत मौला अली (क.व.क.) से रिवायत है कि रसूल-अल्लाह ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ ने इरशाद फरमाया -

“मैं हिक्मत का घर हूँ और अली उसका दरवाज़ा है।”

‘यानि मैं हिक्मत की सराये हूँ और अली उसका दरवाज़ा है और मशहूर अल्फाज़ यह है कि - रसूल अल्लाह ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ ने फरमाया -

“मैं इल्म का शहर हूँ और अली इसका दरवाज़ा है। और कहा कि बेशक रसूल-अल्लाह ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ का इल्म दीगर सहाबा-ए-किराम की तरफ भी आया और हज़रत अली शेरे खुदा (क.व.क.) के लिए मख्खसूस नहीं बल्कि यह तख्खीस इस खास वजह से है कि जनाब अली-ए-मुर्तज़ा (क.व.क.) का इल्म सबसे वसीअ़ तर मफ़्तूह तर और अज़ीम तर है।”

(अब्दुल-हक़-फी-अशीआह अल-लामात फी-शरह मिश्कात-इल-मसाबिह, 04 / 666)

9. हज़रत अल्लामा काज़ी सनाउल्लाह पानीपती (र.ह.) की एहलेबैत-ए-अतहर (अ.स.) से मुहब्बत - सिलसिला-ए-नक़शबन्दिया के शैख़ व मुफ़स्सिर हज़रत अल्लामा काज़ी सनाउल्लाह पानीपती (र.ह.) अपनी तफ़सीर में रक़म तराज़ हैं -

“हज़रत मौला अली मुश्किल कुशा शेरे खुदा अबु तुराब (अ.स.) कमालात-ए-विलायत के कुतुब-ए-इरशाद है - साबिका (अगले ज़माने की) उम्मतों में से कोई भी आप (क.व.क.) के वसीले-व-वसातत के बगैर दरजा-ए-विलायत को नहीं पहुँचा।”

(तफ़सीर-अल-मज़हरी, 02 / 122)

नोट - हज़रत काज़ी सनाउल्लाह पानीपती (र.ह.) जो कि सिलसिला-ए-नक़शबन्दिया के शैख़ हैं, वह यह फ़रमा रहे हैं कि चाहे इस उम्मत में हों, चाहे पिछली उम्मत में कोई भी हज़रत मौला अली (अ.स.) के वसीले के बगैर दरजा-ए-विलायत को नहीं पहुँचा, इसलिए यह हर मोमिन पर वाजिब है और ज़रूरी है कि जैसे रसूल की रिसालत का

इकरार करता है उसी तरह मौला अली (र.ज.) की विलायत का इकरार करे। और उनको अल्लाह व रसूल ने ऐसी विलायत अता की है कि - “क़्यामत तक जिसको विलायत मिलेगी उसको विलायत हज़रत मौला अली मुश्क़िल कुशा ही अता करेंगे। क्योंकि बगैर अली की मुहब्बत और इत्तेबा के बली नहीं होता।”

10. हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहल्वी (र.ह.) का एहलेबैत-ए-अतहर (अ.स.) की शान में बयान - हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहल्वी (र.ह.) बयान फरमाते हैं -

1. ‘इस उम्मत में विलायत का दरवाज़ा सबसे पहले खोलने वाले फ़र्द हज़रत मौला अली (र.ज.) हैं।
2. ‘हज़रत मौला अली (क.व.क.) का राज़े विलायत आप की औलाद-ए-किराम (र.ज.) में सरायत कर गया।’
3. ‘चुनाँचे औलिया-ए-किराम में से एक भी ऐसा नहीं है, जो किसी न किसी तौर पे हज़रत अली (र.ज.) के खानदान-ए-इमामत (जो आपकी औलाद-ए-किराम में 12 इमाम हैं एहलेबैत के) से वाबस्ता न हो।’
4. ‘हुजूर ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ की उम्मत में पहला फ़र्द जो विलायत के बाबे ज़ब का फातेह बना और जिसने इस मकाम बुलंद पर पहला क़दम रखा वह हज़रत अमीर-उल-मोमिनीन मौला अली (अ.स.) की ज़ात-ए-गिरामी है, इसी वजह से रुहानियत व विलायत के मुख्तालिफ़ सलासिल-ए-तरीक़त (जो कि बुजुर्गान-ए-दीन औलिया-अल्लाह के हैं, जैसे-कादरिया, चिंतिया, वगैरह) आप ही की तरफ़ रुजू करते हैं।
5. यही वजह है कि शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहल्वी (र.ह.) लिखते हैं कि अब उम्मत में “जिसे भी बारगाहे रिसालत से फैज़-ए-विलायत नसीब होता है, वह निस्बत-ए-मौला अली (र.ज.) से नसीब होता है, या निस्बते गौस-उल-आज़म बड़े पीर दस्तगीर (र.ह.) से नसीब होता है, इसके बगैर कोई शख्स मर्तबा-ए-विलायत पर फायज़ नहीं हो सकता।”

(‘वाजेह रहे कि निस्खते गौस-उल-आज़म (र.ह.) भी निस्खते मौला अली-ए-मुर्तज़ा (क.व.क.) ही का एक बाब और उसी आफताब की एक शुआओ हैं’)

**(शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहल्वी, तफ़हीमातुल-हाया, जिल्द-1,
सफा-103,104)**

(शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहल्वी, हामात, सफा-60,62)

“रुहे रवाने मुस्तफवी जाने औलिया,
मौला अली बहारे गुलिस्ताने औलिया ।”

- 11. हज़रत सय्यद बदीआ-उद्दीन जिन्दा शाह मदार-ए-पाक मकनपुर शरीफ (र.ह.)
की मुहब्बत-ए-एहलेबैत - हज़रत सय्यद कुतुब-उल-मदार (र.ह.) इरशाद
फरमाते हैं -**

“सतरे कुरआन अस्त अबरु-ए-अली,
मुस्हफे बाशद मरा रु-ए-अली,
गर ब जन्नत बगुज़रम् राज़ी नीयम,
जन्नत बाशद मरा कू-ए-अली”

(तारीखे मदार-ए-आलम)

तरजुमा - “अली के अबरु (भँवे) कुरआन के वरक़ हैं, और मेरा कुरआन तो अली
का चेहरा है, अगर मुझे जन्नत से (बगैर अली (अ.स.) के) गुज़रा जाए तो मैं राज़ी
नहीं हूँ क्योंकि मेरी जन्नत तो अली (अ.स.) की गली है ।”

नोट - हज़रत जिन्दा शाह मदार-ए-पाक (र.ह.) बहुत ज्यादा बुलन्द-ओ-आला मर्तबे
वाले वली-ए-कामिल हैं, और आले रसूल हुसैनी सय्यद हैं, आपकी मौला अली (र.ज.)
से मुहब्बत आपके इस कलाम से वाजेह है (सुहान-अल्लाह) ! आपने अपने इस कलाम
में हज़रत मौला अली (अ.स.) की हकीकत (जितनी आप पर वाजेह हुई) को बयान
किया है ।

हज़रत सय्यद जिन्दा शाह मदार-ए-पाक (र.ह.) से सलासिले तरीक़त में
सिलसिला-ए-मदारिया जारी व सारी है, लाखों-करोड़ों लोग आपसे आज भी फैज़ पा

रहे हैं, और ता क्यामत आप जिन्दा शाह मदार ऐसे ही अपने दादा-जान मौला अली (र.ज.) का सदका लुटाते रहेंगे। (इन्शा अल्लाह)

12. हज़रत हाजी हाफिज़ कारी सय्यद वारिस अली शाह, देवा शरीफ़ (आज़म-अल्लाहू-ज़िक्रहू) सरकार आलमपनाह हुँजूर वारिस-ए-पाक (र.ह.) की मुहब्बत-ए-एहलेबैत (अ.स.) - मेरे पीर-ओ-मुरशिद हुँजूर वारिस-ए-पाक (आज़म-अल्लाहू-ज़िक्रहू) इरशाद फरमाते हैं -

1. 'इश्क जिसको भी मिला है, पंजतन-ए-पाक से मिला है।'
2. 'फरमाया - सिलसिलाए-फ़क़र एहलेबैत-ए-किराम से है।'
3. 'फरमाया - फ़कीरी बीबी फातिमा (र.ज.) से है, और इमाम हुसैन (अ.स.) ने यह फैज़ जारी किया।'
4. 'फरमाया - तसलीम व रज़ा बीबी फातिमा और दोनों साहबज़ादों (हज़रते हसनैन करीमैन (अ.स.)) का हिस्सा है।'
5. 'फरमाया - हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.) ने एक रज़ा-ए-माशूक के लिए तमाम ख़ानदान को मैदान-ए-करबला में शहीद करा दिया, कोई क्या समझ सकता रमज़-ए-आशिकी व माशूकी नाज़ुक है।"

(निदा-ए-गैबी, सफा-147)

सरकार आलमपनाह हुँजूर वारिस-ए-पाक (र.ह.) ने इरशाद फरमाया -

“फ़क़र जनाब मौला अली शेरे खुदा (क.व.क.) का गुलाम है।”

(इरशादात-ए-सरकार वारिस-ए-पाक)

“किताब-ए-आले मुहम्मद (स.अ.वा.व.) पढ़ो तो जानोगे,

वरक़ वरक़ है, बड़ा एहतराम वारिस का”

नोट - सय्यद-उल-कामिलीन इमाम-उल-ऑलिया हुँजूर वारिस-ए-पाक (र.ह.) से एक साहब अर्ज गुज़ार हुए अज़ रुए-हकीकत सहाबा-ए-किराम और एहलेबैत-ए-अतहर की अज़मत व मन्ज़िलत में क्या फ़र्क है। सरकार आलमपनाह हुँजूर वारिस-ए-पाक (र.ह.) ने इरशाद फरमाया -

“एहले हक का मज़हब यह है कि बाएतबारे अख्खार व आसार सहाबा-ए-किराम की ताज़ीम वाजिब और लाज़ीमी है और मुहब्बत-ए-एहलेबैत-ए-अतहर नस्से कतअर्झ (कुरआन) से फर्ज है।”

(हयाते वारिस, सफा-521)

सरकार आलमपनाह हुज़ूर वारिस-ए-पाक (र.ह.) इरशाद फरमाते हैं -

“हमको फ़क़ीरी हमारी दादी जान सच्चदा फ़ातिमा ज़हरा (सलाम-उल्लाह-अलैहा) से मिली है।”

नोट - सरकार आलमपनाह हुज़ूर वारिस-ए-पाक (र.ह.) आले रसूल नजीबुतराफैन हुसैनी सच्चद हैं और हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.) की 26वीं पुश्त में से हैं,

“औलाद हैं यह ख़ास शाहे मशरियाक़ैन के,
26वीं है पुश्त इमाम-ए-हुसैन (अ.स.) के।”

सरकार आलमपनाह हुज़ूर वारिस-ए-पाक (र.ह.) बर्ए सगीर (ऐशिया) के ऐसे वली-ए-कामिल, फ़क़ीर-ए-कामिल हैं जो यूरोप, साऊथ अफ्रीका, स्पेन, जर्मनी और अरब के दीग़र मुमालिक तक गये तबलीग़े दीन-ए-इस्लाम की ख़ातिर, और करोड़ों लोगों को कलिमा पढ़वा कर मुसलमान बना दिया, आपके दस्ते हक परस्त पर अनगिनत लोगों ने बैअत की और फैज़्याब हुए, और सिर्फ इन्सान ही नहीं सारी मर्ज़ूक-ए-खुदा आपसे फैज़्याब हुई, हो रही है, होती रहेगी (इन्शा-अल्लाह)।

आपसे जारी होने वाला सलासिल-ए-तरीकत आपकी निस्बत से सिलसिला-ए-वारसिया कहलाता है, आज भी लोग सिलसिला-ए-वारसिया में दाखिल होकर फैज़्याब हो रहे हैं और होते रहेंगे (इन्शा-अल्लाह) और क्यों न हों क्योंकि -

“नबी धराने के हो कुँवर तुम !
यह जाने सब संसार, जिसको चाहो जो भी ढे ढो,
तुम हो खुद मुख़तार !”

‘वमा अलैना इल्लल बलाग़’

खुलासा-ए-तसनीफ

इस मुख्तासर रिसाले 'अजरे रिसालत' का सिर्फ यही मक्सद है, कि मज़हब-ए-हक़ एहलेसुन्नत-वल-जमाअत के नज़रिये व अकाइद जो एहलेबैत-ए-पाक से जो मनसूब है, वह अवाम-ए-एहलेसुन्नत पर उजागर हो, और हम सबको एहलेबैत-ए-पाक की मुहब्बत व मवद्दत (जो कि नस्से कतअई (कुरआन) से फर्ज़ और अजरे रिसालत है) के ज़रिए से अल्लाह तआला का कुर्ब हासिल हो।

मवद्दत-ए-एहलेबैत का मतलब यही नहीं कि हम सिर्फ एहलेबैत-ए-पाक की फ़जीलत को बयान करें, सिर्फ उनकी ताज़ीम में उनकी दस्तबोसी करें, बल्कि इन सब के साथ-साथ हम अपनी पाक व हलाल आमदनी से जरूरतमंद सादात-ए-किराम की खिदमत करें, क्योंकि सच्चाद ज़ादों पर ज़क़ात व सदका हराम है, तो ज़क़ात की रकम तो उन्हें हरगिज़ नहीं दे सकते, और जो माली व दुनियावी एतबार से कमज़ोर सच्चादगान हैं वह अपनी खुदारी व सियादत की अज़मत की वजह से किसी से कुछ नहीं माँगते हैं, लेकिन उम्मत का यह फर्ज़ बनता है, और यही मवद्दत-ए-एहलेबैत भी है कि उनकी हर तरह से खिदमत की जाए, उनकी मुहब्बत को हर हाल में लाज़िम रखा जाए।

हमसे जितना हो सके आले रसूल की हर मुमकिन खिदमत करें, क्योंकि इस अमल में हुजूर सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम खुश होंगे और जब हुजूर (अ.स.) खुश होंगे तो अल्लाह हमें अपना कुर्ब अता करेगा जिससे हम दुनिया व आखिरत में सुरक्खा होंगे, और यही हमारी खिदमत-ए-एहलेबैत हुजूर पाक सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम की बारगाह-ए-अक्दस में मक्कूल होकर शफाअत की वजह बनेगी।

हदीस-ए-पाक से साफ जाहिर है कि -

- (i) हुजूर 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' ने इरशाद फरमाया - "जो शख्स वसीला हासिल करना चाहता है और चाहता है कि, मेरी बारगाह में

उसकी कोई ख़िदमत हो जिसके सबब मैं क़्यामत के दिन उसकी शफाअत करूँ उसे चाहिए कि मेरे एहलेबैत की ख़िदमत करे, उन्हें खुश करे”

- (ii) हज़रत इमाम राजी ने तफसीर-ए-कबीर में नक़ल किया है कि हु़ज़ूर नबी करीम ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ ने फरमाया – “जो शख्स आले मुहम्मद (स.अ.वा.व.) की मुहब्बत पर फौत हुआ उसने शहादत की मौत पाई, सुन लो जो शख्स आले मुहम्मद (स.अ.वा.व.) की मुहब्बत पर फौत हुआ वह इस हाल में फौत हुआ कि उसके गुनाह बर्खा दिये गये हैं, खबरदार जो शख्स आले मुहम्मद (स.अ.वा.व.) की मुहब्बत पर फौत हुआ वह ताएब होकर फौत हुआ, जान लो ! जो शख्स आले मुहम्मद (स.अ.वा.व.) की मुहब्बत पर फौत हुआ, उसे पहले मलिक-उल-मौत और फिर मुनकर-नकीर जन्नत की खुशखबरी देते हैं, आगाह बाशीद ! जो शख्स आले मुहम्मद (स.अ.वा.व.) की मुहब्बत पर फौत हुआ उसे इस एज़ाज़ के साथ रवाना (भेजा जाता है) किया जाता है जिस तरह दुल्हन दूल्हा के घर भेजी जाती है, अच्छी तरह सुन लो ! जो शख्स आले मुहम्मद (स.अ.वा.व.) की मुहब्बत पर फौत हुआ, उसकी कब्र में जन्नत के दो दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, जान लो ! जो शख्स आले मुहम्मद (स.अ.वा.व.) की मुहब्बत पर फौत हुआ, वह मस्लके एहलेसुन्नत-वल-जमाअत पर फौत हुआ, खूब ज़ह नशीन कर लो ! जो शख्स आले मुहम्मद (स.अ.वा.व.) के बुर्ज़ पर मरा वह क़्यामत के रोज़ इस हाल में आएगा कि उसकी आँखों के दरमियान लिखा होगा, “अल्लाह तआला की रहमत से ना उम्मीद”, खबरदार ! जो शख्स आले मुहम्मद (स.अ.वा.व.) के बुर्ज़ पर मरा वह काफिर मरा, कान खोल कर सुन लो ! जो शख्स आले मुहम्मद (स.अ.वा.व.) के बुर्ज़ पर मरा वह जन्नत की खुशबू नहीं सूँधेगा” ।

- (iii) हज़रत अबु-हुरैरा (र.ज.) फरमाते हैं कि हु़ज़ूर नबी करीम ‘सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम’ ने फरमाया – “तुम मैं से बेहतर वह है, जो मेरे बाद मेरे एहल से अच्छा होगा ।”

(iv) हज़रत इमाम तबरानी वगैरह रावी हैं कि हुजूर नबी करीम 'सल्लाहो-अलैहे-वा-आलिही-वसल्लम' ने फरमाया - "कोई बन्दा (कामिल) मोमिन नहीं हो सकता जब तक मुझे अपनी जान से, मेरी औलाद को अपनी औलाद से, मेरे एहल को अपने एहल से, मेरी जात को अपनी जात से ज्यादा मेहबूब न जाने।"

{बिरकाते-आले-रसूल - (i) सफा - 110, 111

(ii) सफा - 223, 224

(iii) सफा - 244

(iv) सफा - 244, 245}

यह हमारी दुआ है कि अल्लाह तआला इस रिसाले 'अजरे रिसालत' का अस्ल मक्सद अवामुन्नास में उजागर कर दे, और हमको दिल-ओ-जान से मवद्दत व खिदमत -ए-एहलेबैत करने की तौफीक अता करे।

(आमीन)

तालिब-ए-दुआ

फकृत खाकखब दर-ए-हुजूर वारिस-ए-पाक (अ.ज.ह.)
इन्जीनियर जाबिर खान वारसी
(लखानऊ)

कलम

“आले ज़हरा से मुहब्बत कीजिए, यूँ अदा ‘अजरे रिसालत’ कीजिए,
बिन अली-ओ-फातिमा हसनैन के न दावा-ए-इश्क-ए-रिसालत कीजिए।”

“नारा कीजिए या अली मौला मदद, जाने मुश्किल पर क्यामत कीजिए,
मांगिए नालैन-ए-शब्वर का उतारा मुफ़्लिसों कुछ फ़िक्रे दौलत कीजिए।”

“रोईये शब्दीर के ग़म में मुदाम, कुछ तो चारा-ए-शफ़ाअत कीजिए,
ज़िक्रे हैंदर से जले जो बद-नसब क्यों भला उसकी मुरव्वत कीजिए।”

“आईये ज़हरा के दर पे सर के बल ब-अदब फिर अर्ज़ हाजत कीजिए,
हैं पंजतन मक़सूद-ए-आलम बेगुमां ज़िक्र इनका अपनी आदत कीजिए।”

“या रसूल-अल्लाह या मुश्किल कुशा सय्यदा हसनैन नुसरत कीजिए,
पाए-अक़दम चूमीए सज्जाद के इस्तिग़ासा बिल-इरादत कीजिए।”

“हज़रते बाक़र पे हो जाइये निसार कर्खे इल्म-ए-दीन की सूरत कीजिए,
सादिक-ए-आले मुहम्मद मुस्तफ़ा हज़रते जाफ़र की मिदहत कीजिए।”

“मूसा-ए-काज़िम इमामे दीन-ए-हक़ या शहे आली सख़ावत कीजिए,
देखिए मशहद में जलवा-ए-रज़ा, हज़रते हक़ की ज़ियारत कीजिए।”

“हो सीरते मौला तकी पेशे नज़र, कुछ तो कर्खे जुहद-ओ-ताअ़त कीजिए,
हो नफ़ासत क़ल्बो जान में फिर कहीं शाहे नकी से अर्ज़ निर्बत कीजिए।”

“या हसन या असकरी या शहे दीं हम पे भी नज़रे इनायत कीजिए,
अल अजल या मुंतज़र मौला-ए-मन या शहा अब औनो नुसरत कीजिए।”

“शाहे जीलानी का सदका मांगिए हैंदरी कुछ अज़मों हिम्मत कीजिए,
या ख्वाजा-ए-हिन्दल वली वेहरे खुदा हम गरीबों पर इनायत कीजिए।”

“पंजतन के तालिब-ओ-आशिक़ हैं आप, हज़रते ‘वारिस’ से उल्फ़त कीजिए,
ज़िक्रे एहलेबैत कीजिए यूँ ‘कराज’ जोशिश-ए-दरया-ए-रहमत कीजिए।”

(अज़-कलाम-हज़रत मौलाना सय्यद फराज़ हसनी
वारसी साहब किबला (द.ब.आ.))

